" जो स्थान इस समय अनुचित ढंग से अंग्रेजी भोग रही है वह स्थान हिन्दी को मिलना चाहिये । इस विषय में मतभेद होने का कोई कारण न होने पर भी मतभेद होना दुर्भाग्य की बात है । शिक्षित वर्ग को एक भाषा अवश्य चाहिये और वह हिन्दी ही हो सकती है । हिन्दी के द्वारा करोड़ों व्यक्तियों में आसानी से काम किया जा सकता है । इसलिये उसे उचित स्थान मिलने में जितनी देर हो रही है, उतना ही देश का नुकसान हो रहा है ।

राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ।

। सम्पूर्ण गांधी वाङमय ,खण्ड 13, पृ0 425 ।

# हिन्दी-

# लिपि-

# विकास

(बुन्देल खण्ड विश्वविद्यालय झाँसी की पी० एच० डी० (हिन्दी) )
उपाधि हेतु

## शोध - प्रबन्ध
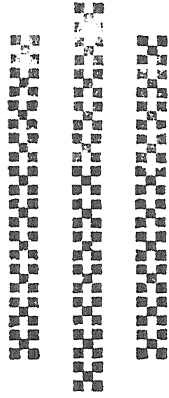
## सत्र 1996-97

शोध छात्र :-
रामआसरे कौशल
एम० ए० (हिन्दी)

निर्देशन :-
डा. ब्रजवासी लाल, डी. लिट;
पूर्व प्राचार्य (डी० वी० डिग्री कालेज, उरई)
एवं उप कुलपति बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

**दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय**
उरई - २८५ ००१ (उ० प्र०)
( बुन्देल खण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी )

॥ ॥

प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध की मौलिकता एवं उपादेयता :- अपने विषय की मौलिकता का का दावा मेरी दृष्टि में दम्भ के अतिरिक्त और कुछ नहीं , क्यों कि संसार में मौलिक कुछ भी नहीं है , पूर्व उपलब्ध रूप, स्वरूप को परिवर्तित कर नवीन रूप में प्रस्तुत करना ही मौलिकता का पर्याय है । क्यों कि मुख्य रूप से विचारों और भावों को नवीन रूप में प्रस्तुत करने की कला {शैली} में ही मौलिकता रहती है न कि स्वयं विचार और भावों में ।[1] इस दृष्टि से , प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध , अपने दृष्टिकोण दिशा एवं विषय की स्वतन्त्र अभिव्यक्ति में मौलिक है ।

आभार प्रदर्शन :- वस्तुतः इस शोध प्रबन्ध के लेखन की कठिनाईयों का निवारण जिस स्नेह वात्सल्य से परम श्रद्धेय डा० कृष्णबली लाल, जैसे मेरे गुरुवर ने किया वैसा मेरे लिये अन्यत्र दुर्लभ है। मेरी शोध साधना के प्रमुख सम्बल आप ही थे । उनको आभार प्रकट करके भी मैं ग्लानियुक्त हूँ तथा अपने को उनसे आजीवन ऋणी समझूँगा ।

मैं अपने पूज्य बाबा स्व० मूलचन्द्र जी कौशल के चरण कमलों में कोटि बन्दना के साथ प्रस्तुत शोध प्रबन्ध अर्पित करता हूँ जिनके शुभाशीष से मैं इस प्रबन्ध-प्रणयन में सफल हो सका । पूज्य पिता जी माता जी तत्पश्चात् मैं अपने परिवार का आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने मुझे अनुकूल वातावरण देकर शोध-प्रबन्ध-रचना योग्य बनाया ।

---

1 - विचार प्रवाह लेखक डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी , प्रथम संस्करण, पृ० 102 ।

## अनुक्रम

षष्ठम् भाग - पाण्डुलिपि लेखन की विकास परक विशेषतायें - 97-124

1. पाण्डुलिपि किसे कहते हैं ,
2. पाण्डुलिपि लिखने का आरम्भ ,
3. विषयानुसार पाण्डुलिपियों के प्रकार

   आख्यानात्मक , आध्यात्मिक ,

   ऐतिहासिक , प्राचीन ग्रन्थों का पुनर्लेखन ,

4. पाण्डुलिपियों की विशेषतायें

   शिरोरेखा रहित , शिरोरेखा सहित

   एक पंक्ति लेखन , वर्णों को मिलाकर लिखना ,

   पूर्ण विराम की स्थिति , अंकुश सीमारेखा का प्रयोग

   अनुच्छेद रहित लेखन , संदर्भित पाण्डुलिपियों के हिन्दी

   सानुवाद उदाहरण , अन्य दुर्लभ पाण्डुलिपियों का

   दिग्दर्शन ,

सप्तम् भाग - हिन्दी लेखन विकास - 125-135

हिन्दी शिक्षण के अंग , हिन्दी लेखन - प्रक्रिया - शिक्षण क्रम - वर्ण संरचना रेखा विकास , संरचना रेखाओं का अनुपात , संरचना रेखाओं का संयोग , वर्ण - आकार , संरचना रेखा क्रम , वर्तमान हिन्दी लिपि की संरचना रेखा तालिका

( )

## नागरी लिपि
## का
## संक्षिप्त इतिहास परक परिचय

(-)(-)(-)(-)(-) 0 (-)(-)(-)(-)(-)

भारतवर्ष में प्रचलित दूसरी लिपियों की समानता में देवनागरी का स्थान सर्वोपरि माना गया है। यद्यपि देवनागरी के साथ-साथ उर्दू, रोमन, मुड़िया, महाजनी आदि अनेक लिपियों का भी दैनिक व्यवहार होता है, तथापि लिखाई के अतिरिक्त छपाई में तो अधिकतर देवनागरी लिपि ही प्रयुक्त होती है। डा० सुनीति कुमार चटर्जी ने कहा - " भारतीय लिपियों में सबसे अधिक प्रचलित देवनागरी लिपि है यह 16 करोड़ से अधिक लोगों की साधारण लिपि है।"

देवनागरी लिपि आर्य लिपि है-भारत की अपनी लिपि है। यह भारतीय संस्कृति की धरोहर है। विद्वानों के मतानुसार इसकी उत्पत्ति प्रागैतिहासिक युग में ई० पूर्व पांचवी सहस्त्राब्दी में मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा की लिपि से हुई थी। इसका अति प्राचीन रूप लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व संस्कृत और अन्य आर्य भाषाओं के लिए स्वीकृत हुआ था और इसी का अति प्राचीन रूप ब्राह्मी ई० पू० तीसरी शताब्दी के लगभग अखिल भारतीय लिपि का रूप ग्रहण कर चुका था।

कतिपय विदेशी विद्वानों का जिनमें श्री बूलर तथा वेबर का नाम भी लिया जा सकता है, मत है कि ब्राह्मी लिपि का सम्बन्ध पश्चिमी एशिया की किसी विदेशी लिपि से है, सारयुक्त प्रतीत नहीं होता। श्री बूलर ने तो यह सिद्ध करना चाहा है कि ब्राह्मी लिपि के 22 अक्षरों की रचना भी उन्हीं के आधार पर हुई है।[2] किन्तु कनिंघम तथा डा० गौरी शंकर हीरानन्द ओझा विद्वानों का दूसरा वर्ग ब्राह्मी की उत्पत्ति विदेशी

लिपियों से नहीं मानता । ब्राह्मी की उत्पत्ति के विषय में ओझा जी का मत है[3] कि " यह भारतवर्ष के आर्यों का अपनी खोज से उत्पन्न किया हुआ मौलिक आविष्कार है । इसकी प्राचीनता और सर्वांगसुन्दरता से चाहे इसका कर्ता ब्रह्मा देवता माना जाकर इसका नाम ब्राह्मी पड़ा, चाहे साक्षर ब्राह्मणों की लिपि होने से यह ब्राह्मी कहलाई हो पर इसमें संदेह नहीं कि इसका विदेशियों से कुछ भी सम्बन्ध नहीं ।" ब्राह्मी का उद्गम चाहे जो भी हो किन्तु इतना निश्चित है कि मौर्यकाल में इसका प्रचार समस्त भारत में था । अशोक के शिलालेखों तथा अन्य प्राचीन सिक्कों और ताम्रलेखों की लिपि ब्राह्मी ही है । नागरी लिपि के प्रारम्भिक रूप का उद्भव आठवीं-नवीं शताब्दी के बीच कुटिल लिपि से हुआ । इसका उद्भव भारत में उत्तरी क्षेत्र में हुआ किन्तु इसके प्राचीनतम लेख भारत के दक्षिणी प्रान्तों में मिले । इससे स्पष्ट है कि देवनागरी जन्म के साथ ही उत्तर से दक्षिण तक फैल गयी थी । यह इसकी लोकप्रियता का ज्वलन्त प्रमाण है । उत्तरी भारत में देवनागरी का कोई भी लेख दसवीं शताब्दी के पूर्व का नहीं मिलता, किन्तु दक्षिणी भारत में आठवीं शताब्दी के लेख भी उपलब्ध हुए हैं । उदाहरणार्थ देवनागरी के प्राचीनतम लेख सर्व प्रथम राष्ट्रकूट वंश के राजा दन्तिदुर्ग के सामनगढ़ से मिले हुए 754 ई० के दानपत्र हैं, उसके बाद राष्ट्रकूट राजा गोविन्दराज द्वितीय के धुलिया से मिले 780 के दान पत्र से प्राप्त होते हैं । इस प्रकार नागरी लिपि आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से विस्तृत रूप में लिखी हुई मिलती है।

भारत का बहुत सा प्रागैतिहासिक वृत्तान्त अभी तक प्राप्त नहीं हो सका है। विदेशियों के निरंतर आक्रमणों के कारण भी हमारे देश के उन गौरवशाली दिनों के जो चिह्न थे, वे लुप्तप्राय हो गये हैं । आज पर्यन्त, जो प्राचीन शिलालेख सिक्के आदि मिलते हैं वे ईसापूर्व की चौथी शताब्दी के आस पास के हैं किन्तु उन शिलालेखों की शैली से लेखन कला

कतिपय विद्वानों ने बौद्धों के ग्रन्थ " ललित विस्तर " में उल्लिखित नागलिपि या नागरी से अभिन्न मानकर यह अनुमान प्रकट किया है कि " नागलिपि" शब्द से ही " नागरीलिपि" शब्द बना होगा। किन्तु डा० राजबली पाण्डेय के अनुसार उक्त दोनों लिपियों में कोई सम्बन्ध नहीं है । [1] इसके अतिरिक्त "नागलिपि" शब्द से "नागरीलिपि" शब्द की रचना के सम्बन्ध में कोई तर्क भी नहीं दीखता ।

इस सम्बन्ध में एक मत यह है कि प्रारम्भ में नागरी लिपि का प्रयोग नगरों में ही होता था, इस कारण नगर की लिपि "नागरी" कहलाने लगी । [2] यह मत कुछ तर्कसंगत तो अवश्य है, किन्तु इसे भी पूर्णतः प्रामाणिक नहीं स्वीकार किया जा सकता । कुछ विद्वानों का यह अनुमान है कि इसका मान बढ़ाने के लिए इसे देवनागरी इसलिये कहा गया कि देव-भाषा संस्कृत के लिए इसका ही प्रयोग हुआ है ।

डा० धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार इस लिपि के लिए देवनागरी या नागरी नाम पड़ने का कारण अन्धकार में अनिश्चित है । [3] इसी प्रकार बाबूराम सक्सेना ने लिखा है कि नागरी नाम की व्युत्पत्ति का अभी तक निश्चय नहीं हो सका है । [4] इस सम्बन्ध में अन्य विद्वानों के मत भी लगभग इसी प्रकार के हैं ।

---

1- डा० उदयनारायण तिवारी, हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, पृ० 566
2 - डा० धी० वर्मा, हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ० 96
3- उपरिवत्
4- डा० बाबूराम सक्सेना, सा० भा०, वि० पृ० 175

## लिपि सुधार एवं विकास संबन्धी प्रयास एवं प्रयोग

अंग्रेज लोग भारत में अपने शासन के प्रारंभिक काल से ही, रोमन - लिपि के व्यापक प्रचार के लिए उतना ही प्रयत्नशील रहे, जितना अपने धर्म, साहित्य, सभ्यता एवं भाषा के लिए। मेकाले की 1883 ई० वाली घोषणा ने अंग्रेजों की इस सुनिश्चित योजना को बिल्कुल स्पष्ट कर दिया था कि वे भारतीयों के केवल रंग और रक्त को ही भारतीय रहने देना चाहते थे। नागरी के स्थान पर रोमन लिपि का प्रचार भी उनकी इसी योजना का एक अंग था, जिसकी प्रतिक्रिया के रूप में, आगे चलकर, सम्पूर्ण देश में नागरी लिपि के प्रचार का प्रयास आन्दोलन के रूप में उठ खड़ा हुआ।

अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य के व्यापक प्रचार के साथ, यों तो रोमन लिपि का प्रचार स्वत: हो ही रहा था, किन्तु अंग्रेज लोग मात्र इतने से संतुष्ट नहीं थे। वे भारत की विभिन्न भाषाओं की भिन्न - भिन्न लिपियों के स्थान पर भी रोमन लिपि को ही प्रतिष्ठित करना चाहते थे। इस प्रकार वे समस्त भारतीय लिपियों का सर्वनाश करने पर तुले हुये थे।

अपने उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उन लोगों ने साम-दाम-भय-भेद आदि सभी प्रकार की नीतियों का उपयोग किया। धर्म प्रचारक पादरी हों या पुलिस अधिकारी न्यायाधीश हो या फौजी अफसर, कोई भी अंग्रेज तथा उनके फरमाबरदार भारतीय, चाहे वे किसी भी विभाग या क्षेत्र के क्यों न हों, रोमन लिपि के गुणगान को प्रभु- भजन के समान ही अपना परम कर्तव्य समझते थे। रोमन लिपि के प्रचार के लिए पुस्तकें छापी गई, लेख

लिखे गये, भाषण दिये गये, गोष्ठियाँ आयोजित की गईं, और इस प्रकार भारत के हजारों शिक्षित दासानुदासों के मन में यह धारणा बद्धमूल कर दी गयी कि रोमन लिपि संसार की अद्वितीय लिपि है ।

दूसरी ओर, रोमन की योग्यता प्रमाणित करने के लिए उस पर आधारित टंकण मुद्रण, दूरालेखन (टेलीप्रिण्टर), तार (मोर्सकोड), शीघ्रलिपि (शॉर्टहैण्ड), संकेत-शब्द (कोड वर्ड्स) आदि अनेक प्रकार के यान्त्रिक तथा प्राविधिक उपकरणों के अस्त्रों से सज्जित कर, उसे लोगों के समक्ष उपस्थित किया गया । फिर भला उसका लोहा कौन नहीं मानता । चकाचौंध में पड़कर सरल भारतीयों ने रोमन के अस्त्रों की शक्ति को ही उसकी भुजा की शक्ति मान ली, अलंकारों को ही आकृति का सौन्दर्य समझ लिया । परिणाम स्वरूप भारत के अनेक ख्यातनाम भाषा शास्त्रियों, शिक्षा विशारदों एवं उच्च पदासीन व्यक्तियों ने रोमन प्रचार का झण्डा अपने स्वामी अंग्रेजों के हाथ से अपने हाथ में ले लिया और बिना गंभीरता पूर्वक सोचे-समझे, देवनागरी के विरुद्ध रोमन का खुलेआम प्रचार करने के लिए, कृतसंकल्प हो, रणक्षेत्र में कूद पड़े।[1]

उस तूफानी विजय- अभियान में रोमन लिपि के सम्मुख दो प्रचण्ड समस्यायें थीं। एक संस्कृत साहित्य के लिप्यन्तरण की और दूसरी देवनागरी लिपि के उन्मूलन की । भारत की अन्य लिपियों को अपदस्थ कर उनका स्थान स्वयं लेने के पूर्व रोमन लिपि के लिए संस्कृत साहित्य के लिप्यन्तरण की परीक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य था। क्यों कि वही उसकी योग्यता की कसौटी थी । वह परीक्षा वास्तव में रोमन की आन्तरिक योग्यता की परीक्षा थी । यदि इस परीक्षा में रोमन सफल हो जाती, अर्थात यदि उसमें प्राचीन वैदिक, संस्कृत,

---

1- डा० सु०कु० चटर्जी ने 1935 ई० में कलकत्ता वि०वि० के जर्नल, "डिपार्टमेण्ट आफ लेटर्स" के भाग 27 में "रोमन अल्फाबेट फार इंडिया" शीर्षक एक निबन्ध प्रकाशित किया, जिसमें उन्होंने रोमन लिपि का प्रयोग उचित बताया था रोमन में लिप्यन्तरण की विधिबतायी

पालि,प्राकृत और अपभ्रंश के वाङ्मय का लिप्यन्तरण सम्भव हो जाता तो प्राय: यह निश्चित था कि वह भारत की अन्यान्य आधुनिक भाषाओं की एक मात्र सफल लिपि के रूप में इस देश में सदा के लिये प्रतिष्ठित हो जाती ।किन्तु इस परीक्षा में वह अनुत्तीर्ण हो गयी। वैदिकी,संस्कृत आदि भारतीय भाषाओं की ध्वन्यात्मक विविधताओं एवं विशिष्टताओं के सम्मुख परास्त होकर उसे घुटने टेक देने पड़े ।इस प्रकार उसके समर्थकों का समस्त भारतीय लिपियों के स्थान पर उसे प्रतिष्ठित देखने का संकल्प,बहुत कुछ प्रारम्भ में ही शिथिल पड़ने लगा ।किन्तु मात्र इतने से ही वे हारकर बैठ जाने वाले जीव नहीं थे ।

अब उन लोगों ने रोमन की योग्यता प्रमाणित करने के लिए नागरी लिपि पर अपनी समस्त शक्ति एवं उपलब्ध साधनों से सुसज्जित होकर देवनागरी पर तीक्ष्ण कुतर्क-बाणों की अजस्र वर्षा प्रारम्भ कर दी परिणाम स्वरूप नागरी -समर्थक भी सचेत हो गये तथा नागरी लिपि में सुधार के प्रयास करने प्रारम्भ कर दिये जिससे नागरी लिपि में यत्किंचित कमी न रह जाये और नागरी लिपि सर्व जन ग्राह्य बन समस्त भारतीयों के आत्म भाषायी गौरव की रक्षा कर सके ।

नागरी लिपि के सुधार के प्रयास के मूल में उक्त परिस्थितियों के अतिरिक्त अन्य गौण परिस्थितियां थीं।उदाहरणार्थ ,जब नागरी में लिखित हिन्दी ,भारत की राजभाषा घोषित की गई और तदनुरूप उत्तर प्रदेश ,बिहार,पंजाब,मध्यप्रदेश तथा राजस्थान की प्रादेशिक सरकारों ने इसे शीघ्रातिशीघ्र इसे शासन व्यवस्था में व्यवहृत करने का निर्णय लिया तब यह आवश्यक हो गया कि परिवर्तित परिस्थितियों तथा यान्त्रिक साधनों के अनुकूल इस लिपि में कुछ ऐसे सुधार किये जायें जिससे यह अपनी प्राचीनता ,सरलता,सुन्दरता तथा वैज्ञानिकता का निर्वाह करते हुये कतिपय नवीन आवश्यकताओं की पूर्ति करने में भी समर्थ हो सके ।

यदि सूक्ष्मतापूर्वक विचार किया जाय, तो ज्ञात होगा कि नागरी लिपि में सुधार की जो प्रारम्भिक आवश्यकताएं उभरीं, वे अंग्रेजी के टंकण-यन्त्र के अनुकूल नागरी को बनाने के प्रयास के कारण। सुधार की अधिकांश योजनाएं अपने मूल रूप में टंकण यन्त्र से सम्बद्ध हैं और सुधारकों में से प्राय: अधिकांश ने यही प्रयोग किया कि टंकण-यन्त्र के अनुकूल लिपि में कैसे परिवर्तन किया जाय। होना यह चाहिये था कि नागरी के अनुकूल टंकण- यन्त्र बनते, जब कि प्रयास टंकण यन्त्र के अनुकूल नागरी लिपि में सुधार लाने का हुआ। नागरी लिपि में सुधार के लिये एवं विकास या सहयोग के लिये जो प्रयास किये गये वे निम्न लिखित हैं -

## नागरी लिपि के सुधार सम्बन्धी प्रमुख प्रयास एवं प्रस्ताव

नागरी लिपि में सुधार के लिए विभिन्न संस्थाओं, समितियों तथा व्यक्तियों के द्वारा प्रारम्भ से अद्यावधि सुधार सम्बन्धी जितने प्रयास किये गये उनका विवरण निम्न है-

नागरी के स्वरूप में सुधार का प्रस्ताव रखने वालों में महाराष्ट्र के सावरकर बन्धुओं के नाम सम्भवत: सर्व प्रथम आते हैं। [1] उन लोगों ने 1935 ई० के पूर्व ही देवनागरी के विभिन्न स्वरों के स्थान पर स्वर की बारहखड़ी (अ, आ, अि, अी, अु, अू आदि) को प्रचलित करने का प्रस्ताव देश के सम्मुख रखा। जिसे मराठी समाचार पत्रों में पहले पहल व्यावहारिक रूप मिला था। बाद में अनेक समितियों तथा व्यक्तियों के द्वारा भी इस प्रस्ताव का समर्थन किया गया।

राष्ट्र भाषा हिन्दी और राष्ट्र लिपि नागरी के प्रचार-प्रसार के राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिए नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना 1893 में वाराणसी में हुई (प्रारम्भ

---

1- डा० उ० ना० तिवा०, हिन्दी भाषा उद्भव विकास, पृष्ठ 580।

2- राजभाषा हिन्दी विकास के विविध आयाम - डा० मलिक मुहम्मद, पृष्ठ 126

में श्री गोपाल शास्त्री ,रामनारायण मिश्र और बाबू श्यामसुन्दर दास आदि इसके संरक्षक रहे । बाद में इसके प्रमुख संरक्षकों में महात्मा पंडित मदनमोहन मालवीय,श्री अम्बिका दत्त व्यास, श्री राधा चरण गोस्वामी, श्री श्री धर पाठक और श्री बदरीनारायण चौधरी आदि उल्लेखनीय है । हिन्दी साहित्य का संरक्षण और पोषण और हिन्दी भाषा का प्रचार -प्रसार इस सभा के प्रमुख लक्ष्य है ।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन ,प्रयाग - नागरी सभा की स्थापना के लगभग 17 वर्ष बाद सन् 1910 में सभा के तत्वाधान में काशी के हिन्दी-प्रेमियों एवं हिन्दी-सेवियों की एक सभा बुलाई गई और यह निर्णय किया गया कि हिन्दी की सेवा में समूचे देश में संलग्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों हिन्दी के विद्वानों एवं प्रेमियों का एक विराट सम्मेलन किया जाए।फलस्वरूप एक विराट सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता महात्मा मालवीय जी ने की ।इसी अधिवेशन में हिन्दी भाषा के प्रचार एवं प्रसार के लिए एक संस्था कायम करने का निर्णय हुआ ।इसके परिणाम स्वरूप प्रयाग में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सूत्रपात हुआ सम्मेलन के प्रमुख सूत्रधार स्वर्गीय राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन थे ।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने नागरी लिपि में पूर्व सुधारकों भांति ही निम्न सुधार का सुझाव दिया - अ , आ, अि, अी, अु, अू, अे, अै, ओ , औ, आदि तथा आधे वर्ण के स्थान पर पूर्ण वर्ण लिखकर नीचे हलन्त लगाने का सुझाव दिया जैसे- कद्दर, ज्ञान = ग्यान आदि ।

इस समिति ने देवनागरी लिपि में सुधार करने के प्रयास के 6- मूलभूत सिद्धान्त बनाये - ‌‌§1§ लेखन ,मुद्रण तथा टंकण में सर्वत्र लिपि का एक रूप हो, §2§ प्रस्तावित लिपि वर्तमान लिपि से अधिक भिन्न नहीं हो, §3§ लिपि के वैज्ञानिक स्वरूप में परिवर्तन न किया जाय ।§4§ प्रत्येक स्वर के लिए एक ही चिन्ह हो । §5§ प्रत्येक ध्वनि के लिए स्वतन्त्र वर्ण हो।

(6) एक ध्वनि के लिए दो चिन्ह नहीं हो ।[1]

कई वर्षों के निरन्तर प्रयत्न के पश्चात इस समिति ने 5 अक्टूबर, 1941 ई की बैठक में[2] निम्न लिखित 14 प्रस्ताव पारित किये :-

(1) लेखन में शिरोरेखा का प्रयोग आवश्यक नहीं है । मुद्रण में शिरोरेखा का प्रयोग रहे, किन्तु छोटे अक्षरों में जहाँ शिरोरेखा के प्रयोग से छपाई में अस्पष्टता आती हो, वहाँ शिरोरेखा का प्रयोग नहीं भी हो सकता है ।

(2) प्रत्येक वर्ण ध्वनि के उच्चारण-क्रमानुसार लिखा जाय ।

(क) जबतक कोई संतोषजनक रूप सामने नहीं आता, तब तक "इ" की मात्रा (ि) वर्तमान पद्धति से ही लिखी जाय, यथा- किर ।

(ख) ए, ऐ, ओ और औ की मात्राएं वर्ण के ठीक ऊपर न लगाकर दाहिनी ओर जरा हटाकर, वर्तमान पद्धति के अनुसार ऊपर लगायी जाय, जैसे - दे वता, दै वता, आे ला औरत आदि ।

(ग) उ, ऊ, तथा ऋ की मात्राएं अक्षर के बाद जाय और पंक्ति में ही लिखी जाय, यथा - कुटिल, पूजा, सृष्टि ।

(घ) अनुस्वार और अनुनासिक के चिन्ह भी अक्षर के बाद ऊपर लिखे जाय, यथा-अंश

(ङ) रेफ से व्यक्त होनेवाला अर्द्ध "र" उच्चारण- क्रम से योग्य जगह पर लिखा जाय, यथा - धर्म ।

(च) संयुक्ताक्षर में द्वितीय "र" सामान्य रूप से लिखा जाय, जैसे - प्र, त्र ।

(छ) संयुक्ताक्षर में भी, सर्वत्र, वर्ण उच्चारण क्रम से एक के पीछे एक लिखे जाय, यथा - दवारका (द्वारका नहीं), विद्वत्ता (विद्वत्ता नहीं)

(3) स्वरों और मात्राओं में समानता तथा सामंजस्य करने के लिए इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, और ऐ के वर्तमान रूप को छोड़कर केवल "अ" में ही इन स्वरों की मात्राएं लगाकर इन स्वरों के मूल स्वरूप का बोध कराया जाय अर्थात "अ" की ही बारहखड़ी की जाय । यथा - अ, आ, अि, अी, अु, अू, अे, अै, ओ, औ, अं अः ।

(4) दक्षिण की लिपियों के स्वरों में ह्रस्व ए और ह्रस्व ओ के स्वरूप आते हैं । उनके लिये मात्रा इस प्रकार लगायी जाये, यथा - अॆ, अॊ ।

1- दे० लि० स्व० वि० स०, पृ० 347

।5। पूर्ण अनुस्वार के स्थान पर। "०। लगाया जाय और अनुनासिक के लिए केवल बिन्दी " ँ " लिखी जाय, यथा सिंह, चांद । व्यंजन के पूर्व हलन्त "ङ्, ञ्, ण्, न्, म्, की जगह पर, जहां प्रतिकूलता न हो। यथा वाङ्मय, तन्मय। अनुस्वार लिखा जाय, यथा - चंचल, पंथ, पंप आदि ।

।6। मुद्रण में अक्षरों के नीचे बायीं ओर यदि अनुकूल स्थान पर बिन्दी लगायी जाय तो उसका अभिप्राय होगा कि उस अक्षर की ध्वनि, उस अक्षर की मूल ध्वनि से भिन्न है। उस ध्वनि का निर्णय प्रबन्ध के अनुसार होगा, यथा - फारसी क़, ख़, ग़, ज़, मराठी फ़, सिन्धी " ज़ " आदि ।

।7। विराम - चिन्ह, आजकल सब भारतीय भाषाओं में जैसे प्रचलित हैं, वैसे ही कायम रखे जाय । पूर्ण विराम का चिन्ह पाई "। " रहे ।

।8।अंको के स्वरूप इस प्रकार रहें - १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, ० ।

।9। वर्तमान ल के स्वरूप में परिवर्तन करना आवश्यक है । उसके स्थान पर गुजराती " ल " स्वीकार किया जाय ।

।10। अ, झ, ण, की जगह बम्बई के अ, झ, ण, रखे जाय और ल, श की जगह हिन्दी के रूप में ल, श रखे जाय । क्ष का रूप क्ष प्रचलित किया जाय ।

।11। मराठी, गुजराती, कन्नड़, तेलुगु आदि भाषाओं में विशिष्ट ध्वनि के लिए जो " ळ " अक्षर प्रयुक्त होता है, वही रखा जाय। उसे ड या ल से व्यक्त न किया जाय ।

।12। ङ के उच्चारण में प्रान्तीय भिन्नता होने से उसका रूप जैसा है, वैसा ही रखा जाए

।13। संयुक्त अक्षरों को बनाने के लिए, जिन वर्णों के अन्त में खड़ी पाई है, जैसे - ख, ग, घ, च, ज, ञ, ण, त, थ, ध, न, प, ब, भ, म, य, ल, व, श, ष, स, उनका संयोज्य रूप खड़ी पाई हटाकर समझा जाय, यथा - ख्, ग्, घ्, च्, ज्, ञ्, ण्, त्, आदि । क और फ का वर्तमान संयोज्य रूप क्, फ् स्वीकृत किया जाय । जिन अक्षरों के अन्त में खड़ी पाई नहीं है, उनका संयोज्य रूप संयोजक चिन्ह।-। लगा कर समझा जाय। संयोजक चिन्ह पिछले अक्षर से मिला रहे, यथा - विद्-या, चिट्-ठ, उच्छ्-वास, कुड्-ढा, ब्रह्-मा ।

( )

(14) शिरोरेखा हटाकर लिखने में भ और ध को म और घ से पृथक करने के हेतु भ और ध में गुजराती की तरह घुंडी लगाई जाय, यथा -

**निष्कर्ष** - उपर्युक्त प्रस्तावों में से कुछ (जैसे दूसरे का ख, ग, घ, ङ और छ तथा तेरह नं० का उत्तरार्द्ध) में केवल टंकण-मुद्रण की सुविधा पर ध्यान दिया गया था, लिपि की वैज्ञानिकता तथा लेखन की व्यावहारिकता पर नहीं। कुछ प्रस्तावों (जैसे 4, 6, 9 और 11) का सम्बन्ध किसी प्रकार के सुधार से न होकर वर्ण-वृद्धि से था, जो देवनागरी से असम्बद्ध भाषाओं की कतिपय विशिष्ट ध्वनियों के लिए प्रस्तावित चिन्ह थे। कुछ प्रस्ताव (पहला, पाँचवे का उत्तरार्द्ध तथा दसवें का उत्तरार्द्ध) स्वयं अपने आप में अनियमित होने के कारण अवैज्ञानिक थे तथा अनेकरूपता को जन्म देने वाले थे। कई प्रस्तावों (जैसे- 6, 7, 8, 12 और 13 के पूर्वार्द्ध) में देवनागरी के लिए कुछ भी नया सुझाव नहीं दिया गया था। वे गुण इसमें पहले ही से स्वयं समाहित हो गये थे। कुछ प्रस्तावों (जैसे -5, 9 और 13 के उत्तरार्द्ध) में वैज्ञानिक तथा व्यावहारिक दृष्टि से काम नहीं लिया गया था और कुछ प्रस्तावों (जैसे 1 का (क) और 8) से देवनागरी के स्वरूप के सम्बन्ध में प्रस्तावकों की अनभिज्ञता प्रकट होती थी। इन्हीं कारणों से नागरी-प्रचारिणी सभा काशी के तत्कालीन सदस्यों तथा देश के अन्यान्य विद्वानों ने इन प्रस्तावों का कड़ा विरोध किया तथा राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति वर्धा के द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के अतिरिक्त अन्यत्र सम्भवत: कहीं भी इन्हें व्यावहारिक रूप नहीं मिला।

**काशी नागरी प्रचारिणी सभा का प्रयास** - 1945 ई० में सभा ने देवनागरी लिपि में सुधार की आवश्यकताओं का अनुभव करके एक उपसमिति का संगठन किया था। उस समिति ने अपने प्रथम अधिवेशन में देवनागरी लिपि में सुधार और पुन: संस्कार के लिए निम्न सिद्धान्त निश्चित किए :-

। क । भारतीय तथा विदेशी भाषाओं की उन विशेष ध्वनियों के लिए देवनागरी में वर्ण तथा संकेत-चिन्ह स्थिर करना, जिनके लिए पहले से कोई वर्ण नहीं है, ताकि देवनागरी में संसार की सभी भाषाएं लिखी जा सकें।

। ख । लिपि के प्रचलित रूप से प्रति संस्कृत लिपि का यथासंभव अपार्थक्य बनाए रखना।

। ग । संयुक्त वर्णों को ऐसा आकार देना कि पहचानने में भ्रांति न हो।

। घ । देवनागरी के सौन्दर्य को सुरक्षित रखना।

। ड़ । देवनागरी-सुधार सम्बन्धी पहले के सभी प्रस्तावों पर विचार करना।

इस निश्चय को कार्यान्वित करने के लिए देश के प्रमुख पत्रों में यह प्रार्थना प्रकाशित की गयी कि इस दिशा में कार्य करने वाले सज्जन और संस्थाएं अपने-अपने प्रयत्न की सूचना और सामग्री समिति के पास भेजने की कृपा करें। इसके फलस्वरूप अन्यान्य व्यक्तियों ने प्रस्ताव प्रस्तुत किए। इनमें से अधिकांश व्यक्तियों ने अपने सुझावों में मुख्य रूप से टंकण-मुद्रण संबंधी सुविधाओं को ही ध्यान में रखा था, देवनागरी की ऐतिहासिक परम्परा और उसके अक्षरात्मक स्वरूप को नहीं। इन प्रस्तावों में श्री श्री निवास का प्रस्ताव सर्वाधिक अनोखा था। उन्होंने देवनागरी के लिए जो वर्ण माला प्रस्तुत की थी, उसके अधिकांश वर्ण तथा सभी मात्राएं प्रचलित वर्णों एवं मात्राओं से नितान्त भिन्न थीं। डा० पन्ना लाल ने इ की मात्रा । । को ई की मात्रा । । के समान ही वर्ण के आगे कुछ छोटा करके लगाने का सुझाव रखा था, यथा- क । कि। सभा की लिपि समिति ने श्री श्री निवास के प्रस्ताव को आगे चलकर आचार्य नरेन्द्रदेव समिति के सम्मुख रखा था, किन्तु वह अस्वीकृत हो गया। इस प्रकार अन्य व्यक्तियों के सुझावों को भी कोई मान्यता नहीं मिल सकी।

31 जुलाई, सन् 1947 को नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रस्तावित प्रतिसंस्कार के

सुझावों की परीक्षा करने हेतु उत्तर प्रदेश की सरकार ने एक देवनागरी-लिपि-सुधार-समिति का संगठन किया, जिसके अध्यक्ष आचार्य नरेन्द्रदेव हुए थे, इस समिति ने विभिन्न विद्वानों के प्रस्तावों पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया और अधिकांश सुझावों की अनुपयुक्तता सिद्ध की। श्री श्री निवास के प्रस्ताव की समीक्षा करते हुए समिति ने यह निर्णय दिया कि स्वरों की आकृति के विषय में जिस एकरूपता की आवश्यकता का अनुभव श्री श्रीनिवास जी ने किया है, उसकी उपयोगिता समिति आवश्यक नहीं समझती।

इस समिति की कुल नौ बैठकें हुईं और उसका पूरा विवरण 21 मई, 1949ई को अध्यक्ष और सदस्यों द्वारा हस्ताक्षरित होकर सरकार के पास भेज दिया गया।[1] समिति के प्रस्ताव निषेधात्मक और स्वीकारात्मक दो भागों में विभक्त थे-

निषेधात्मक प्रस्ताव :- (1) श्री निवास जी के एकमात्रिक और द्विमात्रिक आदि स्वरों के भेद समिति को मान्य नहीं हो सकते। (2) अ की बारखड़ी नहीं बनायी जा सकती। (3) इ की मात्रा को छोड़कर अन्य मात्राओं के वर्तमान स्वरूप में परिवर्तन न किया जाय। (4) किसी व्यंजन के नीचे कोई दूसरा व्यंजन वर्ण न लगाया जाय। (5) टंकन मशीन की सुविधा के लिए नागरी लिपि में कोई अवांछनीय परिवर्तन न किया जाय।

स्वीकारात्मक प्रस्ताव :- समिति के स्वीकारात्मक प्रस्ताव भी दो प्रकार के सुझावों में विभक्त थे 1- सिद्धान्तगत और 2- खासगत।

सिद्धान्तगत सुझाव :- इस प्रकार थे- (1) मुद्रण और टंकण की सुविधा के लिए आवश्यकतानुसार मात्राओं को थोड़ा हटाकर केवल दाहिनी ओर ही बगल में

= = = = = = = = = = = = = = = = = = =

1- कामेश्वर शर्मा, हि0 स0, पृ 55

ऊपर - नीचे लगाया जाय, जैसे - कै कै यी, सं पृ णं आदि । (2) शुद्ध अनुस्वार के स्थान पर " ० " (शून्य) लगाया जाय । व्यंजन के हलन्त ङ्, ञ्, ण्, न्, म् की जगह पर जहाँ प्रतिकूलता न हो ( यथा - वाङ्मय, तन्मय), अनुस्वार चिन्ह " ० " (शून्य) लगाया जाय, जैसे - हंस (पक्षी) । अनुनासिक स्वर के लिए बिन्दी " · " का प्रयोग हो, जैसे - हँसना । (3) शिरोरेखा लगायी जाय । (4) ृ, ु की मात्राएं भी अन्य मात्राओं के समान थोड़ा हटाकर दाहिनी ओर नीचे लगायी जाय, जैसे - कृपा ।
(5) जिन वर्णों का उत्तरार्द्ध खड़ी पाई युक्त है, उनका आधा रूप, खड़ी पाई निकालकर बनाया जाय, जैसे - ख, ग, घ, च आदि । (6) जिन वर्णों का उत्तरार्द्ध खड़ी पाई युक्त नहीं है उनका आधा रूप क और फ को छोड़कर हल चिन्ह " ् " मात्राओं के समान ही, बगल में लगाकर बनाया जाय, जैसे - ङ्, छ्, ट्, द् आदि । (7) ह्रस्व इ की मात्रा भी दाहिनी ओर लगायी जाय ।

वर्णों के रूपगत सुझाव इस प्रकार थे - (1) स्वरों में " " का रूप अ रहेगा । (2) व्यंजनों में छ, झ, ण, ध, भ, ल, ळ और ह के रूप क्रमशः छ, झ, ण, ध, भ, ल, ळ और ह रहेंगे । ह्रस्व इ की मात्रा (ि) का रूप '4' होगा । (3) क्ष और त्र के स्थान पर क्ष और त्र से काम लिया जायगा । (4) विशेष अक्षर श्र ॐ तथा ळ होंगे ।
(5) विराम चिन्ह यथासम्भव वे सब लिये जाय, जो इस समय अंग्रेजी (रोमन) में प्रचलित है । केवल पूर्ण विराम के लिए खड़ी पाई स्वीकार की जाय, यथा - । , - , —, ; : । आदि ।

इस प्रकार नागरी लिपि सुधार के प्रयास के अन्तर्गत अन्य जिन संस्थाओं समितियों ने उल्लेखनीय प्रयास किये उनका उल्लेख निम्न है -

॥ 1 ॥ काका कालेलकर समिति ।

॥ 2 ॥ दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा , मद्रास - सन 1918 में इंदौर में होने वाले हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन की अध्यक्षता महात्मा गांधी ने की थी और इस सम्मेलन में दक्षिण भारत में हिन्दी - प्रचार एवं लिपि सुधार की एक वृहद योजना प्रस्तुत की थी

॥ 3 ॥ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

॥ 4 ॥ गुजरात विद्यापीठ , अहमदाबाद ।

॥5 ॥ बंबई हिन्दी विद्यापीठ , बम्बई ।

॥ 6 ॥ महाराष्ट्र राष्ट्र भाषा सभा , पुणे ।

॥ 7 ॥ हिन्दी विद्यापीठ , देवघर

॥ 8 ॥ हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद ।

॥ 9 ॥ मैसूर रियासत हिन्दी प्रचार समिति , बंगलौर ।

॥ 10 ॥ केरल हिन्दी प्रचार सभा , त्रिवेन्द्रम ।

॥ कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति , बंगलौर ।

॥ 12 ॥ उड़ीसा राष्ट्रभाषा परिषद पुरी ।

॥ 13 ॥ सौराष्ट्र हिन्दी प्रचार समिति, राजकोट ।

॥ 14 ॥ मणिपुर हिन्दी परिषद , इम्फाल । आदि

संस्थाओं ने हिन्दी के प्रचार - प्रसार एवं लिपि सुधार आदि महत्वपूर्ण प्रयासों में प्रशंसनीय भूमिका निभाई । हिन्दी भाषा और साहित्य के उन्नयन में इन संस्थाओं का बहुत बड़ा हाथ रहा है । जब से हिन्दी को राजभाषा और राष्ट्र भाषा का पद मिला , तब से इन संस्थाओं का कार्यक्षेत्र भी बहुत व्यापक हो गया है ।

## नागरी लिपि सुधार में व्यक्तिगत प्रयास

= = = = = = = = = = = = = = = = = = =

नागरी लिपि सुधार में संस्थागत , शासकीय ही नहीं कुछ बुद्धिजीवी हिन्दी सेवियों ने

॥ ॥

| प्रचलित वर्ण स्वरूप | प्रचलित उच्चारण | स्वामी सत्य भक्त द्वारा संशोधित भारती लिपि स्वरूप | संशोधित उच्चारण |
|---|---|---|---|
| थ | थ | भ | थ |
| फ | फ | थ | फ |
| ब | ब | ज | ब |
| श | श | श | श |

इस प्रकार अब तक " ब " ब की भांति ही लिखा जाता था तथा उसका उच्चारण भी " ब" ही होता था किन्तु स्वामी जी के संशोधन के अनुसार लिखेंगे " ज " और बोलेंगे " ब" अब इस प्रकार के संशोधन से क्या लाभ हुआ बीमारी तो वही रही मात्र उसका नाम परिवर्तित कर दिया गया ,नाम परिवर्तित करने से किसी भी रोग का निदान नहीं होता । फिर इससे साधारण जन समाज को पुन: इस लिपि को सीखना होगा । तथा इसमें प्रकाशित पुस्तक पढ़ पाना उनकी सामर्थ्य से बाहर होगा क्यों कि श्री स्वामी जी ने नागरी लिपि का सम्पूर्ण स्वरूप ही परिवर्तित कर दिया है ,अच्छा हो कि वे इसे और कोई नया नाम दे किन्तु देवनागरी लिपि के संशोधन के रूप में हिन्दी भाषियों के समक्ष इसे प्रस्तुत न करें नहीं तो अब तक का सारा साहित्य ,लोगो का अर्जित नागरी लिपि ज्ञान व्यर्थ हो जायेगा ।

2 - <u>संरचना रेखाओं की दृष्टि से अनुपयुक्त</u> :- संशोधित लिपि लेखन में किसी भी प्रकार समय की बचत नहीं होती है इस लिपि की वर्ण संरचना में भी उतनी की रेखाये खीचनी होंगी जितनी कि नागरी लिपि की वर्ण संरचना में उदाहरण स्वरूप :-

नागरी लिपि क = ⊥ ᒣ क भारती लिपि ⊥ ᒣ त्र त्र (1 संरचना रेखा अधिक)

3- <u>समान आकृति की वर्ण रचना</u> :- स्वामी सत्य भक्त द्वारा संशोधित वर्ण - आकृति आकार की दृष्टि से नागरी लिपि के वर्ण के समान ही कागज पर स्थान घेरेगी जैसे - नागरी लिपि → ए, ओ, औ । भारती लिपि → [illegible]

इस प्रकार स्वामी सत्य भक्त द्वारा प्रस्तुत संशोधित नागरी का स्वरूप सर्वथा अनुपयुक्त है।

श्री श्रवण कुमार गोस्वामी :- आपने भी अपने विचार उसको सरल बनाने तथा टंकण में गति बढ़ाने के लिये दिये है आप द्वारा किया नागरी लिपि संशोधन निम्न प्रकार है :-

| ऐ | ओ | औ | अं | अः |
|---|---|---|---|---|
| ए | अ५ | अ४ | अ॰ | अः |

मात्राएं :-

| आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | ओ | औ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ा | y | v | ७ | ९ | L | U | ५ | y |
| का | का | का | क७ | क९ | कy | कu | क५ | कy |

अन्य चिन्ह :-

| क्र | कृ | र्क | कं | कं | कॅ |
|---|---|---|---|---|---|
| क् | कर | (क | क् | क् | कv |

समीक्षा :- गोस्वामी जी द्वारा किया गया संशोधित नागरी लिपि स्वरूप भी सत्य भक्त द्वारा दिये संशोधन के समान ही अपूर्ण है क्यों कि इसमें चन्द्रबिन्दु को ऊपर के स्थान पर दाईं ओर लगाने का सुझाव दिया है किन्तु जब मात्रा की रचना वर्ण से संयुक्त होकर करनी ही है तो उससे क्या लाभ वर्ण का आकार तो उतना ही बढ़ेगा लम्बवत न बढ़कर क्षैतिजवत् बढ़ेगा उदाहरणस्वरूप :-

पूर्व रूप [अं] संशोधित [अ॰] , पूर्व [औ] संशोधित [अy]

इस प्रकार यह स्वरूप, स्थान, सौन्दर्य की दृष्टि से उपयुक्त संशोधन नहीं है।

श्री बी॰ बी॰ लाल द्वारा किया संशोधित स्वरूप :- आपने अन्य भारतीय लिपियों के अक्षरों में से कुछ वर्ण रचना का अनुकरण कर एक नवीन लिपि निर्माण करने का प्रयास किया है :-

भ भा भों भी, क ख (पंजाबी) न प (बंगला) ढ

समीक्षा :- श्री लाल द्वारा दिया सुझाव आंशिक उपयुक्त है उसमें कुछ त्रुटियां है :-

१- विभिन्न भाषाओं के वर्ण लेकर देवनागरी लिपि संशोधित करने से

नागरी लिपि अर्थहीन होकर दुर्बोध हो जायेगी क्यों कि बंगला, असमी आदि विभिन्न भारतीय भाषाओं की अधिकांश वर्ण रचना कठिन और दुर्बोध है ।

2 - अन्य भारतीय भाषाओं के वर्ण ग्रहण कर जो परिवर्तित नागरी लिपि [illegible] होगी वह " आधी बुलबुल आधी बटेर " कहावत को चरितार्थ करेगी तथा इसकी वर्णमाला भी भ्रामक होगी ।

3- इस संशोधन से उच्चारण की भी समस्या उत्पन्न होगी क्यों कि लिखा " ट " जाता है, और यही "ट" देवनागरी में तथा गुरमुखी मे " टैंका " कहा जाता है इस प्रकार के वर्णों को ग्रहण करके उनको किस प्रकार उच्चारित कराया जायेगा इसका उत्तर श्री लाल साहब के पास नहीं है, यदि उसे हम देवनागरी की भांति ही उच्चारित करायेंगे तो वह शब्द अपना उच्चारण गत मौलिक सौन्दर्य खो देगा ।

श्री राम निवास द्वारा किया सुधार :- श्री निवास जी ने " ह" का चिन्ह =, क+- ह = कृ [illegible] ख [illegible], घ = गृ इस प्रकार का है जो कि स्वरों में अस्पष्ट है ।

अन्य सुधारकों द्वारा दिये सुझाव :- अन्य सुधारकों ने नागरी लिपि के " ख, भ, ध की आकृतियों में कुछ परिवर्तन किया है - ख, भ, ध यह संशोधन उचित था जिसे शासन ने भी स्वीकार किया है तथा वर्तमान नागरी लिपि में स्थान दिया है ।

समीक्षा :- यह सुधार नागरी लिपि में " ख" को " र व " न पढ़ने हेतु तथा म को भ न पढ़ने का भ्रम हो इस लिये किया गया है तथा यही अंतर घ और ध मे कायम रखना आवश्यक था । इसलिये इस परिवर्तन को हिन्दी भाषा- भाषियों ने भी स्वीकार कर लिया है तथा बहुलता से प्रयोग भी करने लगे है ।

शासकीय सुधार :-

<u>शासकीय सुधार</u> :- 1959 ई0 के अगस्त महीने में भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय ने देवनागरी के संशोधनों को अंतिम रूप देने के लिए देश के विशेषज्ञों तथा शिक्षा मंत्रियों के दो सम्मेलन बुलाये । इन दोनों सम्मेलनों ने राज्य - मन्त्रिसम्मेलन के कई संशोधनों में महत्वपूर्ण परिवर्तन किये तथा देवनागरी की वर्णमाला को निम्न लिखित रूप प्रदान किया :-

स्वर :- अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

मात्राएं :- ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ ं ः

व्यंजन :- क ख ग घ ङ ।

च छ ज झ ञ ।

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व श ष स ह, ड़ ढ़ ळ, क्ष त्र ज्ञ श्र ।

अंक :- १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ० ।

<u>अन्य संशोधनात्मक प्रस्ताव</u> :- हिन्दी में ॠ - ऌ का प्रयोग नहीं होता, अतः इन्हें स्वरों में सम्मिलित न किया जाय। खड़ी पाई वाले व्यंजनों का संयुक्त रूप खड़ी पाई हटाकर ही बनाया जाय। क और फ के संयुक्ताक्षर बनाने का परम्परागत ढंग ही प्रचलित रहे । ङ, छ, ट, ठ, ड, ढ और द में हल् चिन्ह ( ् ) लगाकर ही उन्हें संयुक्त किया जाय। र के परम्परागत सभी रूप ज्यों के त्यों रहें, यथा - राष्ट्र, धर्म, प्रेम, । श्र का परम्परागत रूप ही रहे । त्र के स्थान पर त्र का प्रयोग किया जाय । ह में हल् चिन्ह

लगाकर भी उसे संयुक्त किया जा सकता है संस्कृत में संयुक्ताक्षरों की पुरानी शैली भी काम में लायी जा सकती है । शिरोरेखा का प्रयोग हो । पूर्ण विराम के अतिरिक्त अन्य सभी विराम चिन्ह अंग्रेजी के अनुसार रहें । विसर्ग के चिन्ह को भी कोष्ठ के रूप में भी प्रयुक्त किया जाय । पूर्ण विराम के लिए खड़ी लाईन का प्रयोग हो । अनुस्वार तथा अनुनासिक दोनों के लिए प्राचीन चिन्हों का ही प्रयोग हो और दोनों प्रचलित रहें ।

यह संशोधन प्राय: आजतक के सरकारी संशोधनों में अंतिम था और भारत सरकार अपने कार्यालयों में अभी इसी संशोधित रूप का व्यवहार करती है ।

निष्कर्ष :- इस प्रकार संशोधित देवनागरी लिपि में ध , भ, और त्र के रूप किंचित भिन्न है तथा एक नया वर्ण ळ जुड़ गया है । जिसका उच्चारण अभी तक आम जनता को अज्ञात है । इसके अतिरिक्त अन्य कोई भी विशेष परिवर्तन नहीं दीखता। यह सामान्य परिवर्तन भी केवल सरकारी कार्यों में कुछ हद तक भले ही मान्य हुए हों, जनता ने इन्हें कभी स्वीकार नहीं किया । फलत: आज भी व्यापक जनवर्ग नागरी के परम्परागत रूप का ही प्रयोग कर रहा है। साथ ही देश के विभिन्न भागों में अ की बारहखड़ी, ध-ए-भ के भिन्न-भिन्न रूपों के प्रयोग तथा अनुस्वार अनुनासिक चिन्हों की अनेकरूपता आदि के कारण कम - तम देवनागरी के जो रूप प्रचलित हो गये है उनसे स्पष्ट है कि नागरी लिपि सुधार का प्रयास एवं सुझाव उत्थान की दृष्टि से हितकर और साधक न होकर बाधक और अहितकर ही हुआ । आ नागरी लिपि की यह अनेकरूपता ही उसके विकास में सबसे बड़ी बाधा बनी हुई है, जो मूलत: सुधार एवं नागरी में किये बार-बार संशोधन का परिणाम है ।

नागरी का सम्बन्ध भारत की प्राचीनतम भाषाओं तथा उनके सुदीर्घ परम्परागत विशाल वाङमय के अतिरिक्त समग्र साक्षर जन - मानस से है। अत: नागरी में

किसी प्रकार के संशोधन की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती क्यों कि नागरी लिपि पूर्ण वैज्ञानिक एवं शीर्घ लेखन में उपयुक्त लिपि है, फिर भी यदि संशोधन की आवश्यकता हो तो वह आंशिक अन्यथा नागरी लिपि चिर परिचित भारतीयों के लिये अजायब घर का कोई विचित्र जन्तु बनकर रह जायेगी। और नागरी में किसी भी प्रकार का आकस्मिक परिवर्तन लाने से पूर्व कम से कम दो अनिवार्यताओं की पूर्ति करनी होगी, जिनमें प्रथम है सम्पूर्ण प्राचीन वाङ्मय का संशोधित लिपि में लिप्यन्तरण, और दूसरी है समग्र साक्षर समाज की अनुमति और समर्थन। मेरी दृष्टि में इन दोनों में से कोई भी बात सम्भव नहीं है इस कारण नागरी लिपि का विकास उसकी आवश्यकताओं के अनुसार अपनी स्वाभाविक गति से ही होगा, उसमें कोई आकस्मिक परिवर्तन लाना न तो वाञ्छनीय है और न हितकर ही। □
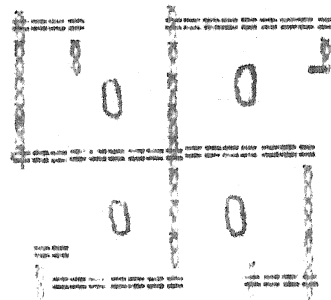
हिन्दी : हिन्दीतर

# भाषाओं की

वर्ण रचना - प्रक्रिया

--------0--------

मनुष्य के पारस्परिक संभाषण का सबल माध्यम भाषा है । सहस्त्राब्दियों से मनुष्य भाषा के माध्यम से अपने भावों विचारों की अभिव्यक्ति करता रहा, किन्तु उसके संरक्षण का उसके पास कोई साधन नहीं था । इसका एक व्यापक दुष्परिणाम यह हुआ कि उस अंधकार युग में न जाने कितनी ऐसी जातियाँ अपनी भाषाओं के साथ विश्व के रंगमंच पर आयी और विलीन हो गईं, जिनका हम आज नाम तक नहीं जानते, और दूसरा यह कि उस प्रागैतिहासिक युग की मानव - सभ्यता के इतिहास ज्ञान के लिए आज हमारे पास पृथ्वी के गर्भ में यत्र-तत्र पाये जाने वाले ध्वस्त महलों, भग्न - मृत्तिका - पात्रों तथा शिला-भूत अस्थि - पंजरों आदि पर आधारित अटकलों एवं अनुमानों के अतिरिक्त अन्य कोई प्रत्यक्ष मार्ग या साधन नहीं है ।

जिस दिन मनुष्य ने भाषा को लिपिबद्ध कर उसे दृश्य - रूप प्रदान करने की कला का ज्ञान अर्जित किया, उस दिन से उसके जीवन में एक नये युग का प्रारम्भ हुआ । उसी दिन से मनुष्य अपने ज्ञान - विज्ञान के संचय और संरक्षण में यथार्थ रूप से प्रवृत्त हुआ, जिससे सभ्यता और संस्कृति का उत्तरोत्तर विकास संभव हुआ । वास्तव में भाषा और लिखने की कला, ये दो ऐसी वस्तुएं हैं, जो मनुष्य को प्रत्यक्ष रूप से पशु से पृथक करती हैं और, जिनके सहारे वह निरंतर उन्नति के पथ पर अग्रसर होता जा रहा है।[1]

------------------------------

1- डॉ० उदय नारायण तिवारी, हि० भा० उ० वि०, पृ० ५४६

यदि लिपि का आविष्कार नहीं हुआ होता तो मनुष्य अपनी सभ्यता तथा ज्ञान - विज्ञान के विकास में आज कितने पीछे पड़ा होता, इसका अन्दाज लगाना मुश्किल है।

भाषा[1] को दृश्य रूप में स्थायित्व प्रदान करने वाले यादृच्छिक वर्ण - प्रतीकों की परम्परागत व्यवस्था लिपि कहलाती है। भाषा में जो स्थान ध्वनि का होता है, वही स्थान लिपि में वर्ण का है। लिपि भाषा को मूर्त स्थायित्व देती है और बदले में उससे सार्थकता पाती है। किन्तु इतनी घनिष्ठता होने पर भी दोनों में प्रकृत या निर्विकल्पक सम्बन्ध नहीं होता। यों व्यावहारिक दृष्टि से दोनों एक दूसरे के लिए नितान्त आवश्यक है, फिर भी लिपि के लिए जो अनिवार्यता भाषा की है, वही भाषा के लिए लिपि की नहीं। तात्पर्य यह कि भाषा लिपि के बिना भी रह सकती है, किन्तु, भाषा के बिना लिपि निरर्थक रेखाओं और बिन्दुओं के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। वाणी का दृश्य - रूप ही लिपि है।

भाषा ध्वनियों की व्यवस्था होती है, और लिपि वर्णों की। जिस प्रकार विभिन्न भाषाओं में एक ही वस्तु के लिये विभिन्न शब्द है उसी प्रकार विभिन्न लिपियों में विभिन्न लिपि - संकेत या वर्ण पाए जाते है।[1] यह लिपि के वर्ण संकेत भी युगानुसार परिवर्तित होते रहे। उदाहरणतः - प्रारंभ में अधिकांश भाषाएं चित्रात्मक थी वर्णों के स्थान पर चित्र बनाकर अपने भावों को संप्रेषित करते थे। भिन्न - भिन्न चित्र ही वर्ण के प्रतीक थे [illegible] उ [illegible] हैं [illegible] । यह कोई चित्र नहीं बल्कि चित्रोदीप्त लिपि के वर्ण है। यह लिपिचिह्न में इतने ही पुन प्रयोग की जाती थी। [illegible] चूंकि यह चित्रात्मक लिपि लिखने में बहुत कठिन थी, इसी कठिनाई के निवारण हेतु अक्षरात्मक लिपि प्रारम्भ हुई। जैसे हिन्दी पूर्णतया अक्षरात्मक लिपि है। इसमें प्रत्येक वर्ण के लिए स्वतन्त्र

---

1. [illegible]

# पंजाबी (गुरुमुखी) वर्ण की रचना-प्रक्रिया

| वर्ण | लेखन विधि | प्रगति संकेत 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | आवृति संख्या | अभ्युक्ति/उच्चारण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ਅ (अ) | | ਅ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ੲ (इ) | | — | ਟ | ੲ | - | - | - | 3 | |
| ੳ (उ) | | ੳ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ਈ (ई) | | — | ਟ | ੲ | - | - | - | 3 | |
| ਸ (स) | | ਮ | ਸ | - | - | - | - | 2 | |
| ਹ (ह) | | ਹ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ਕ (क) | | ਕ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ਖ (ख) | | ਪ | ਖ | - | - | - | - | 2 | |
| ਗ (ग) | | d | d। | ਗ | - | - | - | 3 | |
| ਘ (घ) | | ਘ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ਙ (ङ) | | ਙ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ਚ (च) | | ਚ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ਛ (छ) | | ਛ | - | - | - | - | - | [illegible] | |
| ਜ (ज) | | ~ | ਮ | ਜ | - | - | - | 3 | |
| ਝ (झ) | | ~ | ਝ | - | - | - | - | 2 | |
| ਞ (ञ) | | ਞ | ਞ | - | - | - | - | 2 | |
| ਟ (ट) | | ਟ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ਠ (ठ) | | — | ਠ | - | - | - | - | 2 | |
| ਡ (ड) | | ਡ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ਢ (ढ) | | ਢ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ਣ (ण) | | — | ਟ | ਣ | - | - | - | 3 | |
| ਤ (त) | | ਤ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ਥ (थ) | | ਥ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ਦ (द) | | ਦ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ਧ (ध) | | ਪ | ਧ | - | - | - | - | 2 | |
| ਨ (न) | प्रथम | — | ਟ | ਨ | - | - | - | 3 | |
| | द्वितीय | ⌒ | ਨ | ਨ | - | - | - | 3 | |
| ਪ (प) | | ਪ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ਫ (फ) | | ਫ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ਬ (ब) | | — | ੲ | ਬ | - | - | - | 3 | |
| ਭ (भ) | | ਭ | - | - | - | - | | 1 | |
| ਮ (म) | | ਮ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ਯ (य) | | ਮ | ਯ | - | - | - | - | 2 | |

# बंगला वर्णमाला लेखन प्रक्रिया

| वर्ण | लेखन विधि | प्रगति संकेत | | | | | | आवृत्ति संख्या | अभ्युक्ति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| অ (अ) | | — | - | - | অ | - | - | 4 | |
| আ (आ) | | — | - | - | - | আ | - | 5 | |
| ই (इ) | | — | - | ই | - | - | - | 3 | |
| ঈ (ई) | | - | - | ঈ | - | - | - | 3 | |
| উ (उ) | | — | - | উ | - | - | - | 3 | |
| ঊ (ऊ) | | — | - | - | ঊ | - | - | 4 | |
| ঋ (ऋ) | | - | ঋ | - | - | - | - | 2 | |
| এ (ए) | | এ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ঐ (ऐ) | | - | ঐ | - | - | - | - | 2 | |
| ও (ओ) | | ও | - | - | - | - | - | 1 | |
| ঔ (औ) | | ঔ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ক (क) | | — | - | ক | - | - | - | 3 | |
| খ (ख) | | খ | - | - | - | - | - | 1 | |
| গ (ग) | | গ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ঘ (घ) | | — | ঘ | - | - | - | - | 2 | |
| ঙ (ङ) | | ঙ | - | - | - | - | - | 1 | |
| চ (च) | | চ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ছ (छ) | | — | ছ | - | - | - | - | 2 | |
| জ (ज) | | — | জ | - | - | - | - | 2 | |
| ঝ (झ) | | - | ঝ | - | - | - | - | 2 | |
| ঞ (ञ) | | - | ঞ | - | - | - | - | 2 | |
| ট (ट) | | — | - | ট | - | - | - | 3 | |
| ঠ (ठ) | | — | ঠ | - | - | - | - | 2 | |
| ড (ड) | | — | ড | - | - | - | - | 2 | |
| ঢ (ढ) | | — | ঢ | - | - | - | - | 2 | |
| ণ (ण) | | - | ণ | - | - | - | - | 2 | |
| ত (त) | | — | ত | - | - | - | - | 2 | |
| থ (थ) | | থ | - | - | - | - | - | 1 | |
| দ (द) | | — | দ | - | - | - | - | 2 | |
| ধ (ध) | | ধ | - | - | - | - | - | 1 | |
| ন (न) | | ন | - | - | - | - | - | 1 | |
| প (प) | | - | প | - | - | - | - | 2 | |
| ফ (फ) | | — | ফ | - | - | - | - | 2 | |
| ব (ब) | | — | ব | - | - | - | - | 2 | |
| ভ (भ) | | — | ভ | - | - | - | - | 2 | |
| ম (म) | | — | ম | - | - | - | - | 2 | |

| वर्ण | लेखन विधि | प्रणीत संकेत | आवृत्ति संख्या | अभ्युक्ति |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| | | | | |

बंगला एवं असमी भाषा आपस में समान है। उनमें पारम्परिक उच्चारणगत भेद अवश्य है। साथ ही असमिया में कुछ अतिरिक्त ध्वनियाँ हैं। बंगला भाषा लेखन दृष्टि से क्लिष्ट है। इसमें लेखनी की आवृत्ति गुजराती पंजाबी की अपेक्षा अधिक है। बंगला की आवृत्ति सं०- 92, गुजराती की 78 तथा पंजाबी की 66 है।

## उड़िया वर्णमाला की रचना - प्रक्रिया

| वर्ण | लेखन विधि | प्रणीत संकेत | आवृत्ति संख्या | अभ्युक्ति |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| अ | | | | |
| आ | | | | |
| इ | | | | |
| ई | | | | |
| उ | | | | |
| ऊ | | | | |
| ऋ | | | | |
| ए | | | | |
| ऐ | | | | |
| ओ | | | | |
| औ | | | | |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| କ | (क) | | [illegible] | କ | - | - | - | - | 2 |
| ଖ | (ख) | | ଖ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଗ | (ग) | | ଗ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଘ | (घ) | | ଘ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଙ | (ङ) | | ଙ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଚ | (च) | | ଚ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଛ | (छ) | | ଛ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଜ | (ज) | | ଜ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଝ | (झ) | | ଝ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଞ | (ञ) | | ଞ | ଞ | - | - | - | - | 2 |
| ଟ | (ट) | | ଟ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଠ | (ठ) | | ଠ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଡ | (ड) | | ଡ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଢ | (ढ) | | ଢ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଣ | (ण) | | ଣ | - | - | - | - | - | 1 |
| ତ | (त) | | ତ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଥ | (थ) | | ଥ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଦ | (द) | | ଦ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଧ | (ध) | | ଧ | - | - | - | - | - | 1 |
| ନ | (न) | | ନ | ନ | - | - | - | - | 1 |
| ପ | (प) | | ପ | ପ | - | - | - | - | 2 |
| ଫ | (फ) | | ଫ | - | - | - | - | - | 1 |
| ବ | (ब) | | ବ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଭ | (भ) | | ଭ | ଭ | - | - | - | - | 2 |
| ମ | (म) | | ମ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଯ | (य) | | ଯ | - | - | - | - | - | 1 |
| ର | (र) | | ର | - | - | - | - | - | 1 |
| ଳ | (ळ) | | ଳ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଲ | (ल) | | ଲ | - | - | - | - | - | 1 |
| ବ | (व) | | ବ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଶ | (श) | | ଶ | ଶ | - | - | - | - | 2 |
| ଷ | (ष) | | ଷ | - | - | - | - | - | 1 |
| ସ | (स) | | ସ | ସ | - | - | - | - | 2 |
| ହ | (ह) | | ହ | ହ | - | - | - | - | 2 |
| କ୍ଷ | (क्ष) | | କ୍ଷ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଡ଼ | (ड़) | | ଡ଼ | - | - | - | - | - | 1 |
| ଢ଼ | (ढ़) | | ଢ଼ | - | - | - | - | - | 1 |

# तमिल वर्णमाला की लेखन प्रक्रिया

| वर्ण | लेखन विधि | रचना प्रक्रिया | | | | | | आवृत्ति संख्या | अभ्युक्ति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| அ (अ) | அ | - | - | - | - | 1 | | | |
| ஆ (आ) | ஆ | - | - | - | - | 1 | | | |
| இ (इ) | இ | - | - | - | - | 1 | | | |
| ஈ (ई) | । | ।। | ।·। | ।·।· | ·ா· | 5 | | | |
| உ (उ) | உ | | | | | | | | |
| ஊ (ऊ) | ஊ | ஊ | ஊ | - | - | 3 | | | |
| எ (ऍ) | எ | எ | - | - | - | 2 | | | |
| ஏ (ए) | ஏ | ஏ | | | - | 2 | | | |
| ஐ (ऐ) | ஐ | - | - | - | - | 1 | | | |
| ஒ (ऑ) | ஒ | - | - | - | - | 1 | | | |
| ஓ (ओ) | ஓ | - | - | - | - | 1 | | | |
| ஔ (औ) | ஒ | ஔ | - | - | - | 2 | | | |
| ஃ अकु | ◦ | ◦◦ | ஃ | - | - | 3 | | | |
| க (क) | - | க | - | - | - | 2 | | | |
| ங (ङ) | । | ங | - | - | - | 2 | | | |
| ச (च) | । | ச | - | - | - | 2 | | | |
| ஜ (ज) | ஜ | - | - | - | - | 1 | | | |
| ட (ट) | ட | - | - | - | - | 1 | | | |
| ண (ण) | ண | ண | - | - | - | 2 | | | |
| த (त) | - | த | - | - | - | 2 | | | |
| ந (न) | - | ⌐ | ந | | - | 3 | | | |
| ப (प) | ப | - | - | - | - | 1 | | | |
| ய (य) | ய | - | - | - | - | 1 | | | |
| ம (म) | ம | - | - | - | - | 1 | | | |
| ர (र) | ர | - | | | | 1 | | | |
| ல (ल) | ல | - | | - | - | 1 | | | |
| வ (व) | வ | - | | | - | 1 | | | |
| ழ (ळ) | ழ | - | - | | - | 1 | | | |
| ள (ल) | ள | - | - | - | - | 1 | | | |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ற (र) | | ற | - | - | - | - | 1 |
| ன (न) | | ல | ன | - | - | - | 2 |
| ஷ (ष) | | ஷ | - | - | - | | 1 |
| ஸ (स) | | ஸ | - | - | - | | 1 |
| ஹ (ह) | | ஹ | - | - | - | | 1 |
| ஜ (ज) | | ஜ | - | - | - | | 1 |
| க்ஷ (क्ष) | | க்ஷ | - | | - | | 1 |

वर्णमाला एवं मात्राओं सहित मराठी अथवा मोड़ी की रचना प्रक्रिया

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 𑘀 (अ) | | 𑘀 | - | - | - | - | 1 |
| 𑘁 (आ) | | 𑘁 | - | - | | | 1 |
| 𑘎𑘰 (का) | | 𑘎𑘰 | - | - | - | - | 1 |
| 𑘂 (इ) | | 𑘂 | - | - | - | - | 1 |
| 𑘎𑘱 (कि) | | 𑘎𑘱 | - | - | - | - | 1 |
| 𑘃 (ई) | | 𑘃 | - | | - | | 1 |
| 𑘎𑘲 (की) | | 𑘎𑘲 | - | - | - | - | 1 |
| 𑘄 (उ) | | 𑘄 | - | | - | - | 1 |
| 𑘎𑘳 (कु) | | 𑘎𑘳 | - | - | - | - | 1 |
| 𑘅 (ऊ) | | 𑘅 | - | - | - | - | 1 |
| 𑘎𑘴 (कू) | | 𑘎𑘴 | - | - | - | - | 1 |
| 𑘆 (ऋ) | | 𑘆 | - | - | - | - | 1 |
| 𑘎𑘵 (कृ) | | 𑘎 | 𑘎𑘵 | - | - | - | |
| 𑘊 (ए) | | 𑘀 | 𑘊 | - | - | - | 2 |
| 𑘎𑘹 (के) | | 𑘎 | 𑘎𑘹 | - | - | - | 2 |
| 𑘋 (ऐ) | | 𑘊 | 𑘋 | - | - | - | 2 |
| 𑘎𑘺 (कै) | | 𑘎 | 𑘎𑘺 | - | - | - | 2 |
| 𑘌 (ओ) | | 𑘁 | 𑘌 | | - | - | 2 |
| 𑘎𑘻 (को) | | 𑘎𑘰 | 𑘎𑘻 | - | - | - | 2 |
| 𑘍 (औ) | | 𑘌 | 𑘍 | - | - | - | 2 |
| 𑘎𑘼 (कौ) | | 𑘎𑘻 | 𑘎𑘼 | - | - | - | 2 |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | (क) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (ख) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (ग) | | | - | - | - | - | 2 | |
| | (घ) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (ङ) | | | - | - | - | - | 2 | |
| | (च) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (छ) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (ज) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (झ) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (ञ) | | | - | - | - | - | 2 | |
| | (ट) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (ठ) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (ड) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (ढ) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (ण) | | | - | - | - | - | 2 | |
| | (त) | | | - | - | - | - | 2 | |
| | (थ) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (द) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (ध) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (न) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (प) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (फ) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (ब) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (भ) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (म) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (य) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (र) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (ल) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (व) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (श) | | | - | - | - | - | 2 | |
| | (ष) | | | - | - | - | - | 2 | |
| | (स) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (ह) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (ळ) | | - | - | - | - | - | 1 | |
| | (क्ष) | | | - | - | - | - | 2 | |
| | (ज्ञ) | | | - | - | - | - | 2 | |

# कैथी वर्णमाला की रचना-प्रक्रिया

| वर्ण | |
|---|---|
| (अ) | 1 |
| (आ) | 2 |
| (इ) | 3 |
| (ई) | 1 |
| (उ) | 1 |
| (ऊ) | 1 |
| (ए) | 2 |
| (ऐ) | 3 |
| (ओ) | 3 |
| (औ) | 4 |
| (क) | 1 |
| (ख) | 1 |
| (ग) | 2 |
| (घ) | 1 |
| (ङ) | 1 |
| (च) | 1 |
| (छ) | 1 |
| (ज) | 1 |
| (झ) | 1 |
| (ञ) | 2 |
| (ट) | 1 |
| (ठ) | 1 |
| (ड) | 1 |
| (ढ) | 1 |
| (ण) | 1 |
| (त) | 1 |
| (थ) | 1 |
| (द) | 1 |
| (ध) | 1 |
| (न) | 1 |
| (प) | 1 |
| (फ) | 1 |
| (ब) | 1 |
| (भ) | 1 |
| (म) | 1 |
| (य) | 1 |
| (र) | 1 |
| (ल) | 2 |
| (व) | 1 |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| श | (श्रा) | २ | २। | - | - | - | - | 1 |
| ध | (ठ) | | ध | - | - | - | - | 1 |
| ड | (ड़) | | ऽ | ड | - | - | - | 2 |
| ढ | (ढ़) | | ढ | ढ | - | - | - | 2 |
| क्ष | (क्ष) | | [illegible] | क्ष | - | - | - | 2 |
| ज्ञ | (ज्ञ) | | ध | ध | ज्ञ | ज्ञ | - | 4 |

## नागरी लिपि रचना प्रक्रिया

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | | 3 | ३ | अ | अ | - | | |
| आ | | 3 | ३ | अ | आ | आ | | |
| इ | | — | इ | - | - | - | | |
| ई | | — | इ | ई | - | - | | |
| उ | | — | उ | - | | - | | |
| ऊ | | — | उ | ऊ | - | - | | |
| ए | | — | र | ए | - | - | | |
| ऐ | | — | र | ए | ऐ | - | | |
| ओ | | 3 | ३ | अ | आ | ओ | ओ | |
| औ | | 3 | ३ | अ | आ | आ | ओ | औ |
| अं | | 3 | ३ | अ | अ | अं | | |
| अः | | 3 | ३ | अ | अ | अ· | अः | |
| क | | — | T | व | क | - | - | |
| ख | | — | र | रव | - | - | - | |
| ग | | — | ग | ग | - | - | - | |
| घ | | — | घ | - | - | - | - | |
| ङ | | — | ङ | ङ | - | - | - | |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| च | | च | च | - | - | - | 2 |
| छ | | छ | - | - | - | - | 1 |
| ज | | ज | ज | - | - | - | 2 |
| झ | | झ | झ | झ | | - | 3 |
| ञ | | ञ | ञ | - | - | - | 2 |
| ट | | ट | ट | - | - | - | 2 |
| ठ | | — | ठ | - | - | - | 2 |
| ड | | ड | - | - | - | - | 1 |
| ढ | | ढ | - | - | - | - | 1 |
| ण | | ण | ण | - | - | - | 2 |
| त | | — | त | - | - | - | 2 |
| थ | | थ | थ | - | - | - | 2 |
| द | | द | - | - | - | - | 1 |
| ध | | ध | ध | - | - | - | 2 |
| न | | न | न | - | - | - | 2 |
| प | | प | प | - | - | - | 2 |
| फ | | फ | फ | - | - | - | 2 |
| ब | | व | ब | ब | - | - | 3 |
| भ | | भ | भ | - | - | - | 2 |
| म | | म | म | - | - | - | 2 |
| य | | य | य | - | - | - | 2 |
| र | | र | र | - | - | - | 2 |
| ल | | ल | ल | - | - | - | 2 |
| व | | व | व | - | - | - | 2 |
| श | | श | श | श | - | - | 3 |
| ष | | ष | ष | ष | - | - | 3 |
| स | | स | स | स | - | - | 3 |
| ह | | — | ह | - | - | - | 2 |
| क्ष | | क्ष | क्ष | क्ष | - | - | 3 |
| त्र | | — | — | त्र | - | - | 3 |
| श्र | | स | स | श्र | - | - | 3 |

! !

इस प्रकार देवनागरी लिपि अधिकांश भारतीय भाषाओं के निकट है। उत्तर की तो प्राय: सभी लिपियां मिलती-जुलती ही हैं। केवल दक्षिण की तमिल, तेलुगु, मलयालम लिपियों की संरचना रेखाओं में भिन्नता अवश्य पायी जाती है। किन्तु ध्वनि की दृष्टि से मूल्यांकन किया जाय तो प्राय: वे हिन्दी के समकक्ष ही हैं। हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी नरेशों द्वारा शिलालेखों, दान पत्रों, प्रमाण-पत्रों, स्तुति-पत्रों, और सम्मान-पत्रों के माध्यम से हिन्दी लिपि का प्रयोग शताब्दियों से होता चला आ रहा है। पंडों की पोथियों तथा व्यापारियों के खातों में इसी लिपि का प्रयोग होता आ रहा है। स्वतन्त्रता आन्दोलन का संचालन इसी भाषा और लिपि के माध्यम से हुआ था। भारत सरकार ने देश की एक सामान्य लिपि के रूप में इसी लिपि को स्वीकार किया है। इस लिपि की सरलता तो इस बात से अभिव्यक्त स्पष्ट हो जाती है कि प्रतिवर्ष कुछ संस्थाओं द्वारा संचालित हिन्दी कक्षाओं में तथा केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के पत्राचार पाठ्यक्रम के अन्तर्गत पढ़ने वाले हजारों अहिन्दीभाषी देशी तथा विदेशी छात्र इसी लिपि के माध्यम से हिन्दी पढ़कर परीक्षायें उत्तीर्ण करते हैं। फिर इस लिपि की वैज्ञानिकता सरलता विश्व के लोगों और लिपियों के लिए प्रेरणा और आदर्श का स्रोत है। इस संदर्भ में राष्ट्र पिता महात्मा गांधी का दि० 21-7- 1927 को "नवजीवन" पत्र में प्रकाशित विचार द्रष्टव्य है- "सचमुच मेरा दृढ़ विश्वास है कि भारत की तमाम भाषाओं के लिए एक ही लिपि का होना फायदेमंद है और वह देवनागरी ही हो सकती है। इतना ही नहीं उन्होंने अन्य भाषा भाषियों को हिन्दी सीखने हेतु 1942 ई में हिन्दू विश्वविद्यालय के दीक्षान्त भाषण में जापानियों का दृष्टान्त देते हुए कहा था- कि "जापानी लिपि बहुत कठिन है, फिर भी जापानियों ने रोमन लिपि को कभी नहीं अपनाया उनकी सारी तालीम जापानी लिपि और जापानी जबान में दी जाती है।"

---

1- श्री [illegible] नायर, [illegible] सं० 30, पृ० 213

## वर्ण तथा आकृति - विकास

विश्व की अधिकांश भाषाओं की लिपि वर्ण- मूलक है । भाषा को लिपिबद्ध करने में वर्णों का महत्वपूर्ण स्थान है। वर्णों के अभाव में किसी भाषा का लेखन नहीं किया जा सकता । भाषा का आधार वर्ण है । भाषा के विकास तथा ह्रास में वर्णों के स्वरूप का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है । भाषा के विकास हेतु यह आवश्यक है कि वर्ण-रचना सहजबोधगम्य, सुन्दर , सुडौल तथा आकर्षक हो और उसका लेखन सुगमता से किया जा सके। प्रारम्भिक पाठशालाओं के बच्चों को वर्ण-लेखन का अभ्यास खड़ी-पड़ी, तिरछी वृत्ताकार रेखाओं को खींचकर कराया जाता है , जिससे अक्षर लिखने में कठिनाई न हो । अधिक घुमाव एवं मोड़युक्त वर्णों की रचना दुर्बोध होती है ।सीधी सरल रचना वाले वर्णों का लेखन सरल होता है । वर्ण- रचना की दृष्टि से नागरीलिपि सरल , सहजग्राह्य है । इसी कारण भारत की राष्ट्र-भाषा के रूप में हिन्दी को अनुपम स्थान प्राप्त है ।

दक्षिण भारत की तमिल, मलयालम, तेलुगु, कन्नड़, उड़िया आदि भाषा-वर्णों का लेखन कठिन है साथ ही इन वर्णों का स्वरूप नागरी से अधिक भिन्न है । इन भाषा वर्णों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है, जैसे यह किसी भाषा के वर्ण न होकर पक्षी, पुष्प, मानव आदि के चित्र हों, उदाहरण स्वरूप - कन्नड़ में [ आ ], [ औ ] [ ], [ म ] [ क्रमशः [illegible] , [illegible] , [illegible] , इस प्रकार बनाये जाते है । अन्य भाषाओं में भी त्रिभुजाकार, वर्गाकार, अर्द्धचन्द्राकार आकृतियां वर्णों के रूप में प्रयुक्त होती है जिनको निम्नानुसार विभिन्न आकृतियों के संदर्भ में वर्गीकृत किया जा रहा है -

वृत्ताकार :- भारत की कश्मीरी तथा उर्दू भाषा को छोड़कर सभी भाषाओं में इस प्रकार की आकृतिमूलक वर्णों की रचना सर्वाधिक है । हिन्दी [ ] ट, ठ, ड, द पंजाबी का ठ [ ] [illegible]

ठ ‖ज‖ ठ ‖र‖ आदि वर्ण वर्तुलाकार ही है। गोल वर्णों की रचना प्रक्रिया सरल तथा लेखन-दृष्टि से आसान होती है। प्रारंभिक पाठशालाओं में यदि किसी बालक को खड़िया देकर लिखाया जाये तो भी वह गोलाकृति की संरचना कर देगा किन्तु, यदि सीधी खड़ी, या पड़ी रेखा खिंचवायी जाये तो उसे वह खींचने में असमर्थ रहेगा। यदि खींचेगा भी तो बहुत कठिनाई से। अब हम विभिन्न भाषाओं के संदर्भ में वृत्ताकृति का प्रयोग देखते हैं :-

हिन्दी - ट , ठ , ढ , द

पंजाबी - ठ ‖ठ‖ ਨ ‖न‖ ਰ ‖र‖ ਹ ‖ह‖

गुजराती - ट , ढ

बंगला - ঠ ‖ठ‖

उड़िया - ୦ ‖ठ‖ ର ‖र‖ ପ ‖प‖ ଟ ‖ट‖ ଢ ‖ढ़‖

कन्नड़ - ಠ ‖ठ‖ ರ ‖र‖ ಝ ‖झ‖

तेलुगु - ర ‖र‖ ఠ ‖ठ‖ ప ‖प‖ ఫ ‖फ‖

मलयालम- ഠ ‖ठ‖ റ ‖र‖

**कोणाकार** :- हिन्दी का "न", "म", "भ" तथा तमिल का ட ‖ट‖ ப ‖प‖ वर्ण कोणाकार वर्ण है। इनकी रचना विभिन्न कोणों द्वारा होती है। इन वर्णों का लेखन सीधी रेखाओं द्वारा किया जाता है। अंग्रेजी की सम्पूर्ण वर्णमाला कोणाकार ही है। किन्तु हमारा वर्ण्य-विषय भारतीय भाषायें ही है। अतः भारतीय भाषाओं की कोणाकृतियों की रचना का विवरण प्रस्तुत किया जाता है -

तमिल - ட ‖ट‖ ப ‖प‖ ம ‖म‖ ஈ ‖ई‖ ர ‖र‖ ய ‖य‖ ங ‖ङ‖ ந ‖न‖

मलयालम - ഥ ‖थ‖ പ ‖प‖ ല ‖ल‖

വ ‖व‖ ച ‖च‖ ഫ ‖फ‖

इसी प्रकार उड़िया, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम भाषाओं के वर्ण भी ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे किसी चित्रकार की तूलिका निःसृत कल्पना – पुष्प हों। अथवा किसी चतुर-चितेरे ने भाषा – सरोवर में वर्ण – कमलों को पल्लवित किया हो। विभिन्न भाषाओं में उदाहरण निम्न हैं :-

उड़िया – (ङ) (त) (ह) (ई) (ग) (ण) (ज)

बंगला – (एं) (श) (ग)

कन्नड़ – (म) (प)

तेलुगु – (क) (णे)

मलयालम – (कं) (स) (ई) (ठ) (म)

तमिल – (ङे) (ओ) (प)

उक्त वर्णों को देखकर भ्रम हो जाता है कि यह वर्ण हैं या चित्रकारी किन्तु दक्षिण भारत की भाषाओं का लेखन एवं उच्चारण इन्हीं वर्णों के माध्यम से होता है।

चित्राक्षर :- मानव का आदिकाल से परस्पर संभाषण करने का माध्यम खोजता रहा है। प्रारंभ में मूक-संकेतों के माध्यम से परस्पर अपने विचारों को प्रकट करता था। फिर उसने कुछ ऐसे चिन्हों को निर्धारित किया जो सभी मानव – समूह में प्रचलित हो सकें। संभवतः यह ही कालान्तर में वर्णों के रूप में प्रचलित हुए। अपने विचारों की अभिव्यक्ति हेतु मनुष्य ने वर्णों का निर्माण जीव-जन्तुओं मानव-आकृतियों का चित्र बनाकर भी किया। यही कारण है कि वर्ण-रचना पशु-पक्षियों तथा मानव-आकृतियों के समान भी की जाती है। जिसका विस्तृत उल्लेख निम्न प्रकार है :-

क कन्नड़ – (ओ) (पक्षी)

(औ) (मोर)

ऽ ऽ

तेलुगु - ఙ = ऽ ङ ऽ, ఠ = ऽ ठ ऽ, థ = ऽ थ ऽ

ద = ऽ द ऽ, ధ = ऽ ध ऽ, ఛ = ऽ छ ऽ

इस प्रकार विभिन्न भाषाओं में आकृतिमूलक वर्गीकरण की दृष्टि से वर्णों का क्या स्वरूप है तथा उनकी पारस्परिक क्या समानता तथा असमानता है किस आकृति के वर्णों की अधिकता किस भाषा में है, निम्नलिखित दण्डारेख को देखने से स्पष्ट हो जायेगी

दण्डारेख
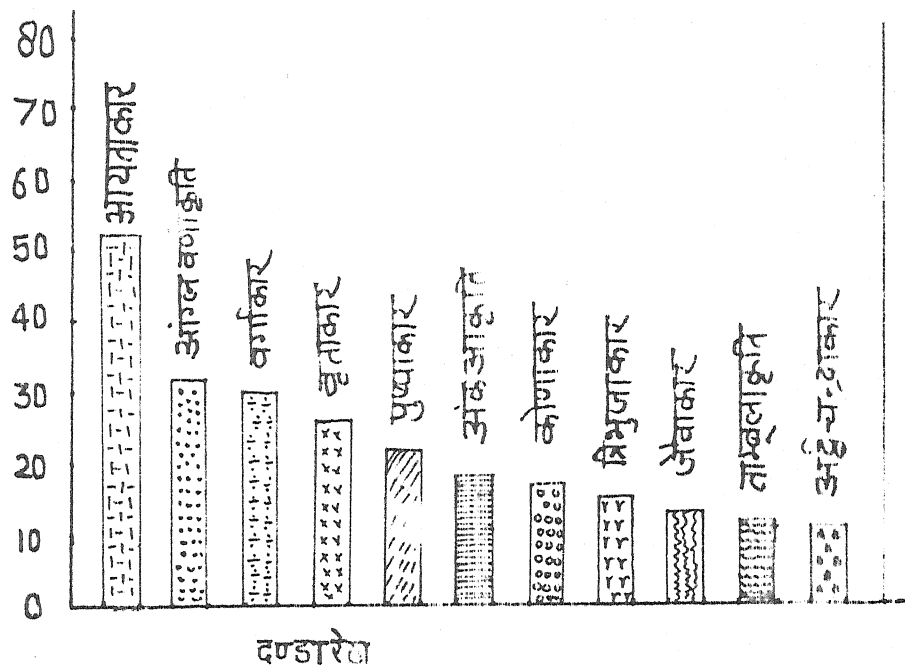
स्पष्ट है कि आयताकार वर्णों की अधिकता तथा अर्द्ध चंद्राकार वर्णों की न्यूनता है ।

आकृतिगत वर्णसंख्या

| आकृति | भाषायें तथा उनकी संख्या | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | हिन्दी | पंजाबी | गुजराती | बंगला | उड़िया | कन्नड | तेलुगु | मलयालम | योग |
| वृताकार - | 05 | 04 | 02 | 01 | 05 | 03 | 04 | 02 | = 26 |
| कोणाकार- | - | - | - | - | - | - | [illegible] | 09 | = 17 |
| त्रिभुजाकार- | 04 | - | - | 06 | 02 | 03 | - | - | = 15 |

| आकृति | हिन्दी | पंजाबी | गुजराती | बंगला | उडिया | कन्नड | तेलुगु | मलयालम | तमिल | असमिया | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| अर्धचंद्राकार | - | - | - | - | 02 | 03 | 03 | - | - | 03 | = 11 |
| पुष्पाकार | - | - | - | 03 | 08 | 02 | 02 | 04 | 03 | - | = 22 |
| [illegible]ाकार | - | - | 02 | - | - | 03 | 02 | 02 | 04 | - | = 13 |
| अंक- आकृति | - | - | - | 02 | - | - | - | 06 | 08 | 02 | = 18 |
| रोमन आकृति | - | - | - | - | 04 | - | 02 | 20 | 12 | - | = 38 |
| वर्गाकार | 08 | 09 | 12 | - | 06 | - | - | - | 02 | 03 | = 40 |
| आयताकार | 05 | 04 | 04 | 06 | 06 | 04 | - | 18 | 08 | 07 | = 53 |
| ताम्बूलाकृति | - | - | - | - | - | 06 | 06 | - | - | - | = 12 |

इस प्रकार निष्कर्ष स्वरूप हम कह सके है कि सभी भारतीय लिपियों में आयताकार वर्णों की प्रधानता है। तथा सभी भाषाओ की लिपियों का निर्माण एक ही प्रकार की C / ɔ I / \ ω ɑ C ∩ U I – रचना रेखाओं से होता है, इसलिये किसी भी भाषा-भाषी के लिये हिन्दी लिपि के वर्णों का निर्माण करना कठिन प्रतीत नहीं होता, आवश्यकता है तो मात्र श्रम और लगन की ।

==== 0 ====

चित्र सं० - 4

आजादी की लड़ाई में मालवीयजी सदैव आगे रहे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वे कई बार सभापति बनाये गये। उन्होंने अपनी सूझ बूझ से देश को सदैव सही रस्ता दिखाया। विद्यार्थी समाज से उन्हें विशेष प्रेम था। वे विद्यार्थियों को व्यायाम संयम तथा देश सेवा का उपदेश दिया करते थे। बालिकाओं की शिक्षा के वे बहुत बड़े समर्थक थे। उनके हृदय में मातृभाषा हिन्दी के प्रति अगाध प्रेम था।

अब्दुल अजीज कक्षा (५)

चित्र सं० - 5

बच्चे के मुख पर अनोखा तेज था पुत्र को देखकर वसुदेव और देवकी को बड़ा हर्ष हुआ लेकिन कंस की याद आते ही उनकी आंखों में आँसू भर आये। देवकी रोकर बोली इस बालक को तो किसी तरह बचाइए। कहीं छिपा ही दीजिए। उसी समय उन्हें सुनाई पड़ा मानो उनसे कोई कह रहा है कि इस बालक को यमुना पार गोकुल में नन्द यशोदा के घर पहुंचा दो। वहाँ से उनकी कन्या ले आओ और उसे पुत्र की जगह कंस को देदो।

— पिंकू सैनी कक्षा ४

चित्र सं० - 6

अपने आप कार रोकते हैं उनका शरीर भी देखने में बहुत अच्छा लगता है हमारे देश में गामा और राम मूर्ति प्रसिद्ध पहलवान हुए हैं। आशीष कुमार कक्षा-2

चित्र सं० - 7

~~वसु~~ कंस की एक चचेरी बहिन थी उसका नाम था देवकी। कंस उसे बहुत प्यार करता था जब देवकी का विवाह वसुदेव के साथ हुआ। तो कंस अपनी बहिन को पहुँचाने के लिए स्वयं उसका रथ हाँक कर ले चला। वह थोड़ी ही दूर गया था कि आकाशवाणी हुई है कंस जिस बहिन को तू इतने प्यार के साथ पहुँचाने जा रहा है उसी के आठवें पुत्र द्वारा मारा जाएगा।

— रजनी कक्षा ५

चित्र सं० - 8

[illegible]

चित्र सं० 9

समाज पर आक्रमणकारी अपना रहा है तो क्षमा की बात करना दुष्टों की दुष्टता को बढ़ाना और संसार में अनीति का अधिक विस्तार होने की संभावना को अधिकाधिक प्रबल बनाना है। उसका उपचार क्षमा के नाम पर कायरता अपनाने से नहीं हो सकता।

भगवान दास ग्राम धराली पो० औ० हर्षिल (उत्तरकाशी)
कक्षा ... उत्तीर्ण

चित्र सं० - 10

कर्म करने में मनुष्य पूर्ण स्वतन्त्र है, पर परिणाम भुगतने के लिये वह नियोजक सत्ता के पराधीन है। हम विष पीने में पूर्ण स्वतन्त्र हैं पर मृत्यु का परिणाम भुगतने से बच जाना अपने हाथ में नहीं।

रणधीर सिंह सवान स० आ० रा० इ० का० हर्षिल

चित्र सं० - 11

शिशुपाल ने भगवान को सौ गालियाँ दी, अपशब्द कहे, सौवीं बार की गाली पर भगवान ने शस्त्र प्रयोग किया।

रामरतन सिंह रा० इ० का० हर्षिल उत्तरकाशी

संसार में महापुरुषों की कितनी महत्वपूर्ण प्रगति के लिए समय का केन्द्रीयकरण और विचारों में केन्द्रीयकरण करना पड़ता है। शरीर आत्मा के कामों में ऐसे ही चलते फिरते हो जाते हैं। उन्हें भी तत्परता पूर्वक किया जाय तो २ घंटे में रसोई आदि के दिनचर्या पूरे हो जाते हैं। रात को जल्दी सोया जाय और सवेरे जल्दी उठा जाय तो वह सवेरे का बचा हुआ समय ऐसा अतिरिक्त लाभ होता है कि उसमें कोई ...

मोहनलाल सोनकर
अध्यापक
रा० इ० का० हर्षिल
उत्तरकाशी

चित्र सं० 15

यह संसार जड़ और चेतन के सत और असत के संमिश्रण से बना है। देव और दानव दोनों यहां रहते हैं। देवत्व और असुरता के बीच सदा संघर्ष चलता रहता है। भगवान का प्रतिद्वंद्वी शैतान भी अनादि काल से अपना अस्तित्व बनाये हुए है। परस्पर विरोधी रात और दिन का, अन्धकार और प्रकाश का जोड़ा न जाने कब से जुड़ा चला आ रहा है। कपड़ा ताने और बाने से मिल कर बना है यद्यपि दोनों की दिशा परस्पर विरोधी है।

रामचन्द्र व्यास
अध्यापक
रा० इ० का० हर्षिल
उत्तरकाशी

चित्र सं० - 16

। ।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का पत्र

प्रधानमंत्रीजी,
आपका खत मुझे मिला
है। यद्यपि आचार्य श्री
महावीर प्रसाद जी से
मेरा कोई परिचय
नहिं तथापि उनकी भाषा
व्याकरण में अपरिचित
नहिं हूं। उनके ७० वर्ष
पूर्ण होने अवसर पर
उनका सन्मान हिंदी
प्रेमीयों द्वारा होना सर्वथा
उचित समझता हूं।

२९/३२ आपका
परवडा जेल मोहनदास गांधी

द्विवेदी स्मृति अंक - भाषा से साभार पृष्ठ - 143

चित्र सं० - 18

पत्रोत्तर का कष्ट न उठाइये।

प्रताप - कार्यालय
कानपुर
31.12.24

प्र० 2/1/25

पूज्य द्विवेदी जी,

सादर प्रणाम।

आप की कृपाओं के लिये कृतज्ञ हूँ। आप के दर्शन करने के पश्चात् अब मैंने सदा के लिये अपनी उस आदत को छोड़ दिया है जिसके कारण मैं दूसरों के विषय में, बिना उन्हें जाने, अपने विचार स्थिर कर लिया करता था। Trivial impressions कितने धोखे वाले (?) होते हैं इसका प्रमाण मुझे अपने जीवन की 33वीं वर्ष में मिला है।

आपके सत्संग से जो शिक्षायें मैंने ग्रहण की हैं उन्हें मैं अपने जीवन में चरितार्थ करने का प्रयत्न करूँगा।

मॉरीशस से लौटने पर पुनः आपके दर्शनार्थ उपस्थित होऊँगा और 15 दिवस आपकी सेवा में रह कर आपके जीवन के अनुभव लिखूँगा। आप जुही में उस समय होंगे तो वहाँ आऊँगा अन्यथा दौलतपुर में ही हाजिर रहूँगा। उन्होंने (?) [illegible] आपके उदारतापूर्ण स्वभाव के कारण मुझे अपनी धृष्टता पर लज्जित होना पड़ा है। आपकी सहृदयता पर मुग्ध हूँ।

कृपाकांक्षी
बनारसीदास चतुर्वेदी

द्विवेदी स्मृति अंक - भाषा से साभार पृष्ठ - 166

चित्र संख्या - 19

डा० राम कुमार वर्मा

'साकेत'
४ प्रयाग स्ट्रीट, इलाहाबाद २११००२

आशीर्वचन

भक्ति, दर्शन और साहित्य की त्रिवेणी पर रामचरित मानस प्रयाग की भाँति चिरकाल तक स्थित रहेगा, इसमें सन्देह नहीं। मानस पर अनेक दृष्टियों पर शोध और आलोचना होती रही है। उसके वैज्ञानिक पक्ष पर आलोचकों और साहित्य मनीषियों का ध्यान कम गया है।

हर्ष और सन्तोष की बात है कि मेरे प्रिय शिष्य डा. रामलखन सिंह सत्यार्थी ने मानस के वैज्ञानिक पक्ष पर बड़ी गंभीरता से शोध कार्य किया है। जहाँ कानपुर विश्वविद्यालय ने उन पर पी-एच. डी. की उपाधि प्रदान की है, वहाँ उ. प्र. शासन ने इस शोध ग्रन्थ के प्रकाशनार्थ पर्याप्त अनुदान भी दिया है। इसी से इस ग्रन्थ के महत्त्व और उपादेयता का प्रमाण मिलता है।

डा. सत्यार्थी बड़े साहित्यिक और प्रतिभावान छात्र रहे हैं। उनके शोध की दिशा बड़ी ही युक्तिसंगत और विश्वसनीय रही है। उनके प्रयत्नों से मानस के ~~दृष्टि~~ अध्ययन में एक नयी दिशा का उद्घाटन हुआ है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारतीय साहित्य में इस ग्रन्थ का स्वागत होगा और डा. सत्यार्थी मानस के विविध दृष्टिकोणों के प्रति अधिक क्रियाशील होंगे। उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभ कामनाएँ हैं।

साकेत. इलाहाबाद।
११-२-'८४

रामकुमार वर्मा

२१

श्री

प्रयाग।
२६.०२.०६

प्रिय महावीर प्रसाद जी

प्रणाम। आपके दोनों कृपा पत्र और दो लेख एक आपका दूसरा बा. मिश्रीलाल गुप्त का पहुंचा। मैं अब तक स्वीकार पत्र नहीं लिख सका। इस के क्षमा कीजियेगा। मैंने पहिला पत्र अपने हाथ से नहीं लिखा। इसको भी क्षमा कीजिये। कार्य बाहुल्य और श्रम पूर्वक काम न करने के दुरभ्यास के साथ मुझ को इस अतः अपने अति सम्मानित मित्रों को भी दूसरे के हाथ से लिखा कर पत्र भेजना पड़ता है किन्तु जैसा उदार आप तथा और सम्मानित मित्र कृपा करते हैं और मेरे हार्दिक भाव को जानकर दूर को क्षमा कर देते हैं। इस से मैं इस प्रकार से काम चलाने को पत्र लिखवा कर भेज देता हूं। मैं आशा करता हूं कि आप इस से कदापि यह कभी न ख्याल करेंगे कि मैं ऐसा मूर्ख या संकुचित हृदय हूं कि आपके गुणों का उचित आदर नहीं करता। आपने मेरे ऐसे पत्र पर भी तुरंत आर्थिक सहायता देना स्वीकार किया है उसके लिये मैं हृदय से धन्यवाद करता हूं। मेरी प्रार्थना है कि जहां तक संभव हो आप प्रति सप्ताह एक लेख अभ्युदय के लिये भेजिये। मैं आशा करता हूं कि आप इसको स्वीकार करेंगे।

हिन्दी भाषा में इस प्रान्त में एक ऐसा प्रतिष्ठित साप्ताहिक पत्र स्थापन करने की चिर काल से आवश्यकता जानी जाती है जिस में विद्वान विचारवान अनुभव सम्पन्न देश हितैषी सज्जनों के लेख छपें और जिस से लिखने का ऐसे सज्जनों को उत्साह हो। ऐसे पत्र का बनाना आपको भी उतना ही इष्ट और प्रिय होगा जितना मुझ को है। किन्तु इस कार्य में वस्तुतः जितनी सहायता आप कर सकते हैं उतनी मैं नहीं कर सकता। मैंने बहुत से और कामों की चिन्ता और बोझ होने पर भी साहस करके पत्र को जारी (कर) दिया है। इस को देशहित के लिये काम में लाना और जारी रहने के योग्य करना आप तथा अन्य देशहितैषी मित्रों का कर्तव्य है। और यह आप ही लोगों की सहायता पर निर्भर है।

यद्यपि अभी यह साहस और अनावश्यक साहस मालूम होगा तथापि मेरी यह इच्छा है कि मैं 'अभ्युदय' में लेखकों की कुछ भेंट करने का क्रम जारी करूं। ऐसे लेखक अभी बहुत कम हैं जिन के लेखों के लिये कुछ भेंट करना पुरस्कार होगा। और पत्र की वर्तमान अवस्था में कुछ देने के योग्य भेंट करना कठिन भी होगा। किन्तु 'प्रारम्भाः क्षेमकराः' इस न्याय से मैं चाहता हूं कि उन लेखों के लिये जो आप के 'वैदिक काल की स्त्रियां' के समान आदर सहित पत्र में छापे जायं, कुछ पत्र पुष्प अर्पण किया जाय। कृपा कर इस विषय में अपनी सम्मति लिखिये। मेरा विचार है कि अभी [illegible] किया जाय और ज्यों २ पत्र की आर्थिक अवस्था अच्छी होती जाय त्यों २ भेंट भी बढ़ाई जाय। इससे किसी योग्य मित्र को कुछ लाभ करने के लायक आय तो होगी नहीं किन्तु इससे एक ऐसा क्रम प्रारम्भ हो जायगा कि जिससे जो मित्र पत्र के बनाने और बढ़ाने में सहायक होंगे वे अपने वत्सल देश हित और मातृ भाषा के हित साधन के संतोष के अतिरिक्त पत्र के लाभ से कुछ आर्थिक लाभ उठाने का भी संतोष अनुभव करेंगे। मुझे आशा और विश्वास है कि यदि आप तथा दो तीन और मित्र जिनको मैं लिख रहा हूं पत्र को पूरी सहायता देंगे तो थोड़े काल में १५ के बाद दस हजार ग्राहक हो जावेंगे।

विशेष आपको लिखना आवश्यक नहीं। मैं आशा और विश्वास करता हूं कि जिस भाव से मैं इस पत्र को लिख रहा हूं उसी भाव से आप इसको विचारेंगे। और प्रति सप्ताह एक या दो लेख से सहायता करेंगे।

मैंने विषय विनोद का भाग इसलिये निकाल दिया था कि उसमें आपका मत नहीं प्रकाशित था और उसके लेख सर्वथा प्रिय न रहता। मैं आशा करता हूं आप उससे असंतुष्ट न हुवे होंगे।

बा. मिश्रीलाल के लेख के विषय में फिर लिखूंगा।

भवदीय

मदन मोहन मालवीय

# सर्वेक्षण परक - देवनागरी वर्ण माला लेखन शैली

卐

अ

अ
अ
अ
अ
अ
अ
अ
अ

# आ

आ आ

आ आ

आ आ

आ आ

आ आ

आ आ

आ आ

आ आ

आ आ

आ आ

आ आ

आ अ

आ अ

आ अ

आ अ

आ आ

आ आ

आ आ

आ आ

# ह

(0.1)

0

ओ - ओ, ओ, ओ, ओ

औ - औ, औ, औ

अं - अं, अं, अं

— ० —

क - क, क, क, क, क

ख - ख, ख, ख, ख,

ग - ग, ग, ग

घ - घ, घ,

ङ - ङ, ङ

च - च, च,

छ - छ, छ, छ

ज - ज, ज, ज, ज,

झ - झ, झ, झ,

ञ - ञ, ञ, ञ,

ट - ट, ट, ट, ट

ठ - ठ, ठ,

ड - ड, ड ड

ढ - ढ, ढ, ढ,

ण - ण, ण, ण, ण,

त - त, त, त,

थ - थ, थ, थ,

द - द, द, द,

ध - ध ध ध, ध

न - न, न, न, न,

प - प, प, प,

फ - फ, फ, फ.

ब - ब, ब, ब

भ - भ, भ, भ

म - म, म म, म

य - य, य, य, य

र - र, र, र, र,

ल - ल ल, ल ल

व - व, व, व,

श - श, श श

ह - ह ह, ह, ह, ह

क्ष - क्ष, क्ष, क्ष = क्ष

त्र - त्र, त्र, त्र, त्र.

ष - स, स स

( स, और ष, का र तथा प की भांति निर्मित)

पाण्डुलिपि प्राचीन संस्कृति और सभ्यता की प्रेरकवाहिका है। पाण्डुलिपियाँ वह प्रामाणिक दस्तावेज है जिस पर आधुनिक विश्व का साहित्य, विश्वास और श्रद्धा अवलम्बित है। भारत का ही नहीं विश्व का सम्पूर्ण इतिहास समेटे पाण्डुलिपियाँ यत्र-तत्र सर्वत्र अपनी उपेक्षा से आठ-आठ आँसू रोती मिलती के लिए विवश है, काश सरकार या जनमानस इस अमूल्य सम्पदा को सुरक्षित रख सके तो उसमें उसका ही नहीं वरन् विश्व का कल्याण निहित है। ये हमारी पथ - प्रदर्शक है, इतिहास की कुरीतियों को उन्होंने स्वीकार किया है अतः परिस्थितियों में उनकी उपादेयता निर्विवाद है।

__पाण्डुलिपि किसे कहते हैं__ :- किसी कवि अथवा लेखक की प्राचीन या नवीन हस्तलिखित गद्य या पद्य रचना को पाण्डुलिपि कहते हैं।

__पाण्डुलिपि लिखने का कारण__ :- भारत में ज्ञान का प्रचार वाचिक रूप में भी था और भारत का प्राचीन वाङ्मय न केवल मौखिक परम्परा, अपितु लिखित परम्परा में भी सुरक्षित रक्खा जाता है। ज्ञान - से लिखा है कि " लिखने का प्रचार भारतवर्ष में प्राचीन समय से ही होना चाहिये, क्यों कि यदि वेदों के लिखित ग्रन्थ विद्यमान न होते तो कोई प्रकाण्ड प्रतिशाख्य न बन पाता।"

बाथलिंक के अनुसार " पहले काल में साहित्य के प्रचार में लिखने का उपयोग नहीं होता था,

॥ ॥

लेखन कर्ता स्वयं अपने हाथ से तैयार करते थे, और पंख, लोहे तथा सोने के निब वाली लेखनी का भी उपयोग किया जाता था।

प्राचीन पाण्डुलिपियों की विशेषतायें :- पाण्डुलिपियों की कुछ प्रमुख विशेषतायें निम्न लिखित है :-

1- शिरोरेखा का प्रथम प्रयास में ही पूरा खींचना :- इस प्रकार के लिखित प्राचीन स्वरूप अधिक उपलब्ध होते हैं इस प्रकार की पाण्डु प्रतियों में शिरोरेखा को शब्द के अनुपात में नहीं बल्कि सीधी लम्बी पूर्ण रेखा के रूप में प्रयुक्त किया गया है। जिसमें एक साथ कई शब्द लिखे हुये हैं। उदाहरण स्वरूप निम्न लेख दृष्टव्य है :-

मममीटनहिंकरमोरेखाजोकुछबिधनालिखा
भगुगकेदोदीनोदियादेखनकोनयनोदिया
भोतेहंसबब्रमकेदेनारक्तीपितलाया
मगेपांचवादोयकोताते होगिकोजदूराय
संत मलूकदास

2- कई शब्दों का सम्मिलित लेखन :- पाण्डुलिपियों में आधुनिक लेखन की भांति शब्दों को अलग-अलग रूप में न लिखकर एक साथ मिला-मिला कर कई शब्दों को लिखा जाता था, उदाहरण :-

चरवानुहदिसकमुंगलहांहीनवधः स्खानसोमागोभा
मोमुगोकछलहबालव्रयतेयनुसंलोघवूलसघताः
ऋवेठवजारसाहुसोन्काउलकचबकयलसोघीनगु
कोदीरोदेसैकोमोहुसावुरहसकीरीनायरसमुरह
रसिकप्रिया- लेखक लाला मूलश्रीय, सं० 1849

गं ९

उमासुतं गदवंतं विरूपाक्षं गवचक्रसमप्रभं ६ ध्य
वंचनिश्चलंशांतंतंनमामिविनायकं ७ त्वयापुराते
पूर्वेषांदेवानांकार्यसिद्धये गजरूपंसमास्थायत्रासि
ताःसर्वदानवः ८ ऋषीणांदेवतानांचनायकत्वंप्र
काशितं इतिस्तुतिःसुरैरग्रेपूज्यसेत्वंभवात्मजं ९
त्वामाराध्यगणाध्यक्षंसर्वज्ञंकामरूपिणं कार्यार्थेर
क्तकुसुमैरक्तचंदनवारिभिः १० रक्तांवरधराभूत्वा
चतुर्थ्यामर्चयेत्ततः एककालंद्विकालंत्रिकालंनाय
तेनैनाशनः ११ राजानंराजपुत्रंवाराजमंत्रिणमेव

२

वा एवंचसर्वविघ्नेषुवसंकुर्यात्सराध्रुकं १२ यत्फ
लंसर्वतीर्थेषुसर्वयज्ञेषुयत्फलं तत्फलंसमवाप्नो
तिस्तुत्वादेवंविनायकं १३ विघ्नंनभवेत्तस्यनचग
छेत्सुराभयं नचविघ्नंभवेत्तस्यायाज्ञोजाचस्मरोभवे
त् १४ यइदंपठतेस्तोत्रंषड्भिर्मासैर्वरंलभेत् संवत्स
रेणसिद्धिंचलभतेनात्रसंशयः १५ इतिश्रीस्कंदपु
राणेप्रभासखंडेगणेशस्तोत्रंसंपूर्णम् अथमंत्रलि
ख्यते गजजोनयेनमः इतिमंत्रजथाशक्तिनित्यंजपे
तसानुमनवांछितंभवति तद्दशांशतिलगुगुष्टेनजा

श्रीगनेसजू नमः ॥ लिष्यते प्रेमदी

प्रेम दीपिका

श्रीगणेशाय नमः॥ ॥अथ गणेशसहस्रनामावलीप्रारंभः॥ ॥ॐ॥ अस्य श्री महागणपतिस्तो
त्र मंत्रस्य॥ महागणपतिर्ऋषिः॥ नानाछंदांसि महागणपतिर्देवता॥ ॐमिति बीजं॥ तुंगमिति
शक्तिः॥ स्वाहेति कीलकं॥ आत्मनः सर्वपापक्षयार्थं श्रीगजानन प्रीत्यर्थं सहस्रनामस्तोत्र जपे विनि
योगः॥ ॥अथ न्यासः॥ ॐ गां अंगुष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ गीं तर्जनीभ्यां नमः॥ ॐ गीं तर्जनीभ्यां नमः॥ ॐ
मध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ गैं अनामिकाभ्यां नमः॥ ॐ गौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ ॐ गः करतलकरपृष्ठा
भ्यां नमः॥ ॐ गां हृदयाय नमः॥ ॐ गीं शिरसे स्वाहा॥ ॐ गूं शिखायै वषट्॥ ॐ गैं कवचाय हुं॥ ॐ
गौं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ गः अस्त्राय फट्॥ ॥अथ ध्यानं॥ ॥श्वेतांगं श्वेतवस्त्रं सितकुसुम
गणैः पूजितं श्वेतगंधैः क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरतरुविमले रत्नसिंहासनस्थं॥ दोर्भिः पाशांकुशाब्जाभ
युक्तं तिरुचिरं चंद्रमौलिं त्रिनेत्रं ध्याये च्छांत्यर्थमीशं गणपतिममलं श्रीसमेतं प्रसन्नं॥ ॥इति ध्या
नं॥ ॐ गणेश्वराय नमः॥ ॐ गणक्रीडाय॰॥ ॐ गणनाथाय॰॥ ॐ गणाधिपाय॰॥ ॐ एकदंताय॰
॥ ॐ वक्रतुंडाय॰॥ ॐ गजवक्त्राय॰॥ ॐ महोदराय॰॥ ॐ लंबोदराय॰॥ ॐ धूम्रकर्णाय नमः॥१॥

ॐ चतुर्लक्षजपप्रीताय॰॥ ॐ चतुर्लक्षप्रकाशकाय॰॥ ॐ चतुराशीतिलक्षाणां जीवानां देहसंस्थित
य॰॥ ॐ कोटिसूर्यप्रतीकाशाय॰॥ ९९०॥ ॐ कोटिचंद्रांशु निर्मलाय॰॥ ॐ सप्तकोटिमहामंत्रमंत्रित
वपवयुतये नमः॥ ९९२॥ ॐ शिवोद्भवाद्यष्टकोटि विनायक धुरंधराय नम॰॥ ॐ त्रयस्त्रिंशत्कोटिसु
रश्रेणीप्रणतपादुकाय॰॥ ॐ अनंतनाम्ने॰॥ ॐ अनंतश्रिये॰॥ ॐ अनंताय॰॥ ॐ अनंतसौख्यद
य॰॥ ॐ अनंतदेवतासेव्याय॰॥ ॐ अनंतसौभाग्यदायकाय नमः॥ ॥१०००॥ ॥इति श्री गणे
श पुराणे महागणपतिप्रोक्तं गणेशसहस्रनामावली संपूर्णम्॥ ॥संवत् १८५८॥ शाके १७२३॥
चित्रभानुनाम संवत्सरे दक्षिणायने वर्षाऋतौ श्रावणे मासे कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां तिथौ भृगुवास
रे तद्दिने पुस्तकं समाप्तं॥ जालवण ग्राम मध्ये लिखितं॥ ॥हर्षेडुलकपुनामक गोपाल भट्टात्म
ज विष्णु भट्टेन लिखितं॥ ॥श्री गजानना र्पणमस्तु॥ ॥श्री लक्ष्मीनारायण प्रसंनास्तु॥

श्री गणेश सहस्त्रनाम - 4

श्रीगणेशाय नमः॥ ॥अथ गणेश सहस्रनामावली प्रारंभः॥ ॥ॐ मिति सर्वत्र॥ ॥
ॐ गणेश्वराय नमः॥ गणक्रीडाय। गणनाथाय। गणाधिपाय। एकदंष्ट्राय। वक्रतुंड
य॥ गजवक्त्राय। महोदराय। लंबोदराय। धूम्रवर्णाय॥१०॥ विकटाय। विघ्ननायका
य। सुमुखाय। दुर्मुखाय। बुद्धाय। विघ्नराजाय। गजाननाय। भीमाय। प्रमोदाय।
आमोदाय॥२०॥ सुरानंदाय। मदोत्कटाय। हेरंबाय। शंबराय। शंभवे। लंबकर्ण
य। महाबलाय। नंदनाय। अलंपटाय। अभीरवे॥३०॥ मेघनादाय। गणंजयाय। वि
नायकाय। विरूपाक्षाय। धीराय। शूराय। वरप्रदाय। महागणपते। बुद्धिप्रियाय।
क्षिप्रप्रसादनाय॥४०॥ रुद्रप्रियाय। गणाध्यक्षाय। उमापुत्राय। अघनाशनाय। कु
मारगुरवे। ईशानपुत्राय। मूषकवाहनाय। सिद्धिप्रियाय। सिद्धिपतये। सिद्धये॥५०॥
सिद्धिविनायकाय। अविघ्नाय। तुंबुरवे। सिंहवाहनाय। मोहिनिप्रियाय। कटंकटा
य। राजपुत्राय। राजपुत्राय। शकलाय। संमिताय॥६०॥ अमिताय। कूष्मांडसाम

तावयवप्रवर्त्तये। त्रयस्त्रिंशत्कोटिसुरश्रेणिप्रणपादुकाय। अनंतदेवसे॥९०।
अनंतशुभदायकाय। अनंतशक्तिसहिताय। अनंतमुनिसंस्तुताय। अनंतना
म्ने। अनंतश्रीये। १०००॥ अनंताय। अनंतसौख्यदायकाय॥ इति गणेशस
हस्रनामावलीसमाप्तम्॥ श्रीगजाननार्पणमस्तु॥ छ॥ संवत् १८८२ शाके १७
४८ भाद्रपद मासे कृष्णपक्षे १२ बुधवासरे तद्दिने मैं खगजलिखितेसमाप्तं॥

श्री गणेश सहस्रनाम - भैरवगंज
सं- १८८३
फलक सं- ५

श्री गणेशाय नमः अथसौभाग्यसुधोदयनंत्योक्तंसिंहासनविद्यायासहस्राक्षरीमालामंत्रप्रारंभः श्रीस्कंद उवाच हयाननमहाबुद्धेसर्वशास्त्रविशारद केनोपायेनदेवेशकैवल्यंलभतेध्रुवं १ तत्सर्वंविस्तराद्ब्रूहिहयग्रीवदयानिधे हयग्रीव उवाच शृणुवत्समहाभागतपोराशिमहामते २ नवप्रीत्यामुनिश्रेष्ठमालामंत्रंमहाद्भुतं अधुनाकथयिष्यामिविस्तरेणतवाग्रतः ३ येनविज्ञानमात्रेणमोक्षभागिभवेन्नरः सिंहासनिमहाविद्यासर्वसौभाग्यदायिनी ४ दंडिनीयक्षि

णीमुख्यासदागायंतियैभवं स्मरणात्कीर्तनाद्वत्समनोवांछाफलप्रदं ५ अस्यमंत्रमाहात्म्यंज्ञायतेशंकरस्स्वयं विनान्यासंविनाध्यानंविनाहोमंचतर्प्पणं ६ सकृदुच्चरिताविद्यासर्वपापैःप्रमुच्यते वासनामदनंमायाकूटत्रयसमन्वितं ७ विलोमेनद्विरावृत्त्याचोत्न्यासंसमंत्रकं ध्यानंचपूजनंचैवमंत्राराजवदाचरेत् ८ अस्यश्रीश्रीविद्यामहारिकासहस्राक्षरीमहामालामंत्रस्यदक्षिणामूर्तिऋषयेनमःशिरसि पंक्तिःछंदसेनमःमुखे श्रीविद्यामहामहारिकादेवता

हिन्दी लेखन ⁞ विकास

= 0 =

लेखन क्या है :- किसी भाषा को लिपिबद्ध करना " लेखन " कहलाता है ।

<u>लेखन का महत्व</u> :- लेखन इतिहास का सजग प्रहरी है । किसी भी राष्ट्र की परम्परायें संस्कृतियाँ यदि किसी भाषा में लिपिबद्ध वर्णित की गई हैं तो सदियों पश्चात भी हम उस समय की परम्पराओं और रीतिरिवाजों से अवगत हो सकते हैं ।प्राचीनकाल के शिलालेख ताम्रपत्र हजारों वर्ष पुराने इतिहास को प्रकट करने में समर्थ है ।यदि शिलालेखों, ताम्रपत्रों का लेखन नहीं किया जाता तो हम अतीत की उज्ज्वल परम्पराओं से अनभिज्ञ रहते । किसी भी भाषा को किसी भी उपयुक्त लिपि में लिपिबद्ध किया जा सकता है ।प्राय: विकसित भाषाओं को उनकी परम्परागत लिपियों में ही लिखने का चलन है ।यथा- संस्कृत, मराठी , प्राकृत, अपभ्रंश , हिन्दी "देवनागरी" में, अंग्रेजी रोमन में, पंजाबी "गुरुमुखी" में मलयालम "मलयालम" में लिखी जाती है ।

भाषा - अधिगम के चार प्रमुख कौशल है - श्रवण, भाषण ,वाचन, लेखन ।
भाषा की मौखिक अभिव्यक्ति पर आधारित - 1- श्रवण ,2-भाषण

भाषा की लिखित अभिव्यक्ति पर आधारित - 1- वाचन 2-लेखन

वाचन "बोध" पक्ष से तथा लेखन "अभिव्यक्ति" पक्ष से सम्बन्धित है ।भाषा की लिखित अभिव्यक्ति के अन्तर्गत ये दक्षतायें समाविष्ट है - 1-कथ्य विषय । 2- वाक्य सांचे 3- पद -क्रम 4- पद - रूप 5- वाक्य -गठन 6 - वर्तनी 7- वर्ण - रचना । ये सभी दक्षतायें बहुत कुछ भाषा संरचना ज्ञान पर निर्भर है ।

लेखन शिक्षण का वाचन से सह सम्बन्ध है । वाचन के अन्तर्गत ये दक्षतायें समाविष्ट हैं - वर्ण पहचान ,अनुतानयुत,वाक्य -वाचन, कथ्य विषय को समझने की क्षमता । लेखन को प्रभावित करती है ।

इस प्रकार लेखन शिक्षण के साथ-साथ यदि वाचन - पक्ष को सम्बद्ध नहीं किया जाए तो लेखन - शिक्षण एकांगी और अधूरा ही रह जाएगा । भाषा- बोधन तथा भाषा अभिव्यक्ति के सभी पक्षों का समावेश लेखन में हो जाता है । श्रवण निष्क्रियता,उच्चारण सक्रियता ,वाचन अपूर्णता तथा लेखन पूर्णता का द्योतक है ।

लेखन शिक्षण के अंग

| ‖ क ‖ वर्ण लेखन शिक्षण | ‖ ख ‖ वर्तनी शिक्षण | ‖ ग ‖ रचना शिक्षण |
|---|---|---|
| 1-वर्ण भेद कर सकना | 1-शब्द का लिखित रूप जानना । | 1- कथ्य विषय का चयन कर सकना |
| 2-वर्ण-संयोग पहचान सकना | 2-शब्द का उच्चरित रूप जानना । | 2-वाक्य सांचों का चयन करना । |
| 3-वर्ण तथा ध्वनि का सह सम्बन्ध जानना । | | 3-पद-क्रम का चयन कर सकना । |
| 4-वर्ण - रचना कर सकना | | 4-शब्दों को पद- रूप प्रदान करने का ज्ञान होना । |
| 5-वर्ण -संयोग कर सकना | | 5-उपयुक्त-वाक्य-गठन कर सकना |
| 6-अनुलेखन कर सकना | | 6-अनुवाद कर सकना । |
| 7-प्रतिलेखन कर सकना | | 7-विरामादि चिह्नों का प्रयोग जानना । |
| 8-श्रुतलेख कर सकना । | | |
| 9-लिप्यन्तरण कर सकना । | | |

इस प्रकार लेखन हेतु उपरिलिखित पक्षों की आवश्यक जानकारी होना चाहिये ।

हिन्दी वर्ण लेखन -प्रक्रिया निरीक्षण क्रम - किसी भी भाषा की वर्ण लेखन प्रक्रिया अति महत्वपूर्ण होती है ।वर्ण के निम्न लिखित आधारभूत अंग है -

1- वर्ण संरचना रेखाये - किसी भी वर्ण की कुछ आधारभूत संरचना रेखाये होती है उनका स्वरुप चाहे सीधा हो, तिरछा हो, या गोल ,पड़ा हुआ उन्हीं से वर्ण का निर्माण होता है महत्वपूण वर्ण संरचना रेखाओं का स्वरुप इस प्रकार है -

C Ͻ / \ ∪ ∩ ɑ । — ᒪ )
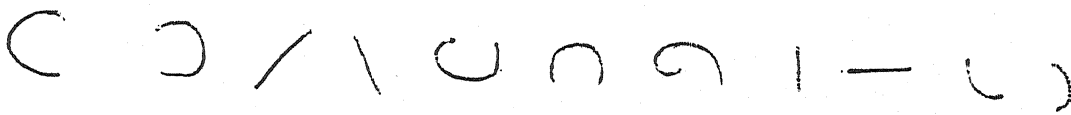
2- संरचना रेखाओं का अनुपात - प्रत्येक हिन्दी वर्ण में संरचना रेखाओं का एक निश्चित अनुपात होता है जिसके मिलने से किसी वर्ण का निर्माण होता है -

1- शिरो रेखा तथा दो अर्द्ध वृत के मिलने से बनी आकृति - = उ

2- शिरोरेखा तथा एक छोटी खड़ी पाई में अर्द्ध वृत मिलने से - = ट

3- शिरोरेखा तथा पूर्ण वृत से निर्मित आकृति = ठ

4- शिरोरेखा तथा दो खड़ी पाई से निर्मित वर्ण = ग

5- शिरोरेखा तथा दो खड़ी पाई के मिलने से बना वर्ण = म, भ,

इस प्रकार निश्चित संरचना रेखाओं से ही किसी वर्ण का निर्माण होता है यह संरचना रेखाये खड़ी पाई, पड़ी पाई, वृत, अर्द्धवृत, मुड़ी हुई , एक ,दो , तीन किसी भी अनुपात में किसी वर्ण में सम्मिलित हुई होती है देवनागरी लिपि की वर्ण संरचना में इन रेखाओं का विवरण इस प्रकार है -

3- संरचना रेखाओं का संयोग :- वर्ण संरचना रेखाओं के परस्पर मिलने से ही वर्ण निर्मित होता है। इनका क्रम यदि सरल हो तो किसी भाषा की लिपि को सीखने में कठिनाई का अनुभव नहीं होता देवनागरी वर्ण माला संरचना रेखाओं के आधार पर जिससे सीखने में सरलता हो निम्न क्रम से लिखने का अभ्यास करना चाहिये-

1- ग म न र स त
2- व ब ख क च
3- प फ ष ए ऐ
4- उ ऊ अ आ ओ औ
5- भ श त ल ॆ ॅ ि ऋ स
6- ट ठ ढ ढ़ द ो ै
7- छ व थ - ं ः
8- ड ई इ य थ
9- ण ज ड ड़ ड ी ी
10- ज्ञ क्ष ह श्र श्र क्र
11- क़ ख़ ग़ ज़ फ़
12 - खड़ी पाई हटाकर बनने वाले व्यंजन - गुच्छ
13- क क़ फ से बनने वाले व्यंजन गुच्छ
14- ह्र से बनने वाले व्यंजन गुच्छ
15- र से बनने वाले व्यंजन - गुच्छ
16- वाचन के लिए इतर प्रचलित वर्णों, एवं संयुक्त व्यंजन

4 - वर्ण - आकार :- संरचना रेखाओं की दीर्घ, लघु आकृति पर निर्भर है। देवनागरी के वर्णों में कम से कम तीन तथा अधिक से अधिक आठ संरचना रेखाएं खींचनी पड़ती है। एक संरचना रेखा का मतलब है - एक बार में लेखनी को बिना उठाए तथा बिना रुके खींचना, यथा -

/ / ( ( ये सभी एक-एक संरचना रेखा से बने है। देवनागरी की संरचना रेखाएं- इस प्रकार है - ( ( ) — ⌒

इन मुख्य संरचना रेखाओं के उपभेद है, यथा - सीधी रेखा --- सीधी रेखा के उपभेद -

— / | \ म ष र

0 वृत के उपभेद = O O ० • ठ व न ड़

C अर्द्ध वृत के उपभेद = ९ ८ ८ ८ त प ट ह

Ↄ अर्द्ध वृत के उपभेद = ɔ ɔ ा अ ज क

∠ कोण के उपभेद = ८ ६ थ य

ये मुख्य संरचना - रेखायें तथा इनके उपभेद अर्थपूर्ण है क्यों कि इनके परिवर्तन से वर्णरचना में परिवर्तन हो जाता है तथा एक वर्ण से दूसरा वर्ण बन जाता है, यथा -

योग - ( ग म - ) ( न म । ) ( य थ ० ) ( ट ठ० )

घटाव - ( म ग - ) ( ब व, ) ( ष प, ) ( क व ा )

स्थानापत्ति - ( त प८८ ) ( य प८८ ) ( व ज ८ ० ) ( ज न ० ० )

देवनागरी के वर्ण एक पड़ी सीधी रेखा ( -- शिरोरेखा ) पर लटके हुये से दिखाई देते हैं। अधिकांश वर्णों का आकार आयताकारवत है। यदि कागज या तख्ती खानेदार है तो देवनागरी लेखन में सुविधा रहेगी। वर्ण आकार की दृष्टि से देवनागरी के वर्णों के ये वर्ग बनते हैं -

ग ग़ म भ न ; र स त ल ळ ; प फ फ़ ष ण

व ब क क़ ख ख़ , घ ध थ छ , श ए ऐ

ट ठ ढ द ढ़ क्ष , ड ड़ ड. इ ई झ ज्ञ ह ,

य थ श्र , अ आ ओ औ उ ऊ, ऩ ण़ ञ श्र ।

संरचना रेखा संख्याओं के आधार पर तीन रेखाओं से बनने वाले वर्ण ये है -

1 2 3 1 2 3 1 2 3 1 2 3 1 2 3

‾ ɔ । = ग , ‾ ‿ । = ञ , ‾ ɔ ˎ = र , ‾ ९ । = त , ‾ ɔ ɔ = उ ,

‾ ‿ । = प , ‾ ∪ । = ण , ‾ ८ । = व , ‾ ८ ɔ = ए , ‾ ८ ७ = ॥ = 10 वर्ण

( 8 )

चार रेखाओं से बनने वाले वर्ण निम्नलिखित है - म ग भ ऊ ल फ ष ब क प घ थ ष
य ध द ट ड श ऐ ळ ज अ

संरचना रेखा संख्या -
==============

| 1 | 2 | 3 | 4 | = | | 1 | 2 | 3 | 4 | = | | 1 | 2 | 3 | 4 | = | | 1 | 2 | 3 | 4 | = | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| - | ɹ | - | \| | = | म | - | ɹ | . | \| | = | ग | ٦ | ~ | \| | - | = | भ | - | ɔ | ३ | ٦ | = | ऊ |
| - | ɲ | ɱ | \| | = | ल | - | ʟ | ५ | ɔ | = | फ | - | ʟ | ʋ | \| | = | ष | - | c | ɞ | \| | = | ब |
| - | c | ⌐ | ٦ | = | क | - | - | ɽ | \| | = | प | - | ( | ω | \| | = | घ | ९ | ω | \| | - | = | ध |
| - | ʟ | ʋ | \| | = | ष | - | ɔ | ɽ | \| | = | य | ٩ | ɽ | \| | - | = | थ | - | ' | ɞ | ९ | = | द |
| - | ' | G | , | = | ट | - | \| | c | ɔ | = | ड | - | ɔ | . | \| | = | श | - | ( | ɭ | ɔ | = | ऐ |
| - | ' | c | ɔ | = | ळ | - | ʋ | - | \| | = | ज | - | ɔ | - | ! | = | अ | | | | | | |

कुल = 23 वर्ण

पाच रेखाओं से बनने वाले वर्ण निम्नलिखित है - स फ़ क़ ख क्ष ड़ ड़ ड झ ह श्र अ ज़

संरचना रेखा संख्या -
==============

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | = | निर्मित वर्ण | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | = | निर्मित वर्ण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| - | ɔ | ɽ | - | \| | = | स | | - | ʟ | \| | h | . | = | फ़ |
| - | c | a | ɔ | ɸ | = | क़ | | - | ɔ | ( | \| | a | = | ख |
| - | ε | ɕ | - | \| | = | क्ष | | - | ' | c | ɔ | . | = | ड़ |
| - | ' | c | ɔ | . | = | ड़ | | - | ' | c | ɔ | ɽ | = | ड |
| - | c | ٤ | \| | - | = | झ | | - | ' | c | c | - | = | ह |
| - | / | ə | \| | / | = | श्र | | ɔ | ३ | - | ! | - | = | अ |
| - | ʋ | - | \| | . | = | ज़ | | | | | | | | |

कुल 13 वर्ण
========

छह रेखाओं से बनने वाले वण यह है - ख़ ई आ
संरचना रेखा संख्या -
==============

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | = | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | = | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | = | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| - | ɔ | ɽ | c | \| | . | = | ख़ | - | ' | c | ɔ | ɽ | c | = | ई | ɔ | ३ | - | \| | - | \| | = | आ |

कुल 03 वर्ण
===========

सात रेखाओं से बनने वाले वर्ण ये है - झ ओ श्र

संरचना रेखा संख्या

1 2 3 4 5 6 7    1 2 3 4 5 6 7    1 2 3 4 5 6 7

– र ट ड ड झ । = झ   – ़ उ ऊ अ आ ` = ओ   – । न त्र श्र श्रा c = श्र

कुल 3 वर्ण

आठ रेखाओं से बनने वाले वर्ण ये है - औ

संरचना रेखा संख्या

1 2 3 4 5 6 7 8

– ़ उ ऊ अ आ ओ ै = औ

कुल 1 वर्ण

वर्णों की इन मुख्य तथा उपरेखाओं में कुछ रेखाएं वर्ण को आकार प्रदान करती है, तथा कुछ सुडौलता। आकार प्रदान करने वाली रेखाओं को अनिवार्य तथा सुडौलता प्रदान करने वाली रेखाओं को ऐच्छिक या गौण कह सकते है। सभी हिन्दी के वर्णों में शिरोरेखा ऐच्छिक या गौण रेखा है क्यों कि यह सुडौलता प्रदान करने वाली है। पूरी खड़ी पाई वाले वर्णों की खड़ी पाई, हुक्वाले वर्णों का अंश हटा देने पर वर्ण की आत्मा शेष रह जाती है, उसका शारीरिक ढांचा अस्त-व्यस्त हो जाता है, यथा - ग ज क "या ठ्र ज ढ

इसीलिए इन्हे अस्तित्व के लिए किसी पूर्णाकार वर्ण का आश्रय लेना पड़ता है।

| | | वर्ण सं० | | संरचना सं० | | कुल सं० सं० |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 - तीन संरचना रेखाओं से बनने वाले वर्णों की संख्या | - | 10 | x | 3 | = | 30 |
| 2- चार संरचना रेखाओं से बनने वाले वर्णों की संख्या | - | 23 | x | 4 | = | 92 |
| 3- पांच संरचना रेखाओं से बनने वाले वर्णों की संख्या | - | 13 | x | 5 | = | 65 |
| 6- छः संरचना रेखाओं से बनने वाले वर्णों की संख्या | - | 03 | x | 6 | = | 18 |
| 7- सात संरचना रेखाओं से बनने वाले वर्णों की संख्या | - | 03 | x | 7 | = | 21 |
| 8- आठ संरचना रेखाओं से बनने वाले वर्णों की संख्या | - | 01 | x | 8 | = | 08 |

कुल संरचना संख्या = 234

## हिन्दी वर्ण संरचना आरेख
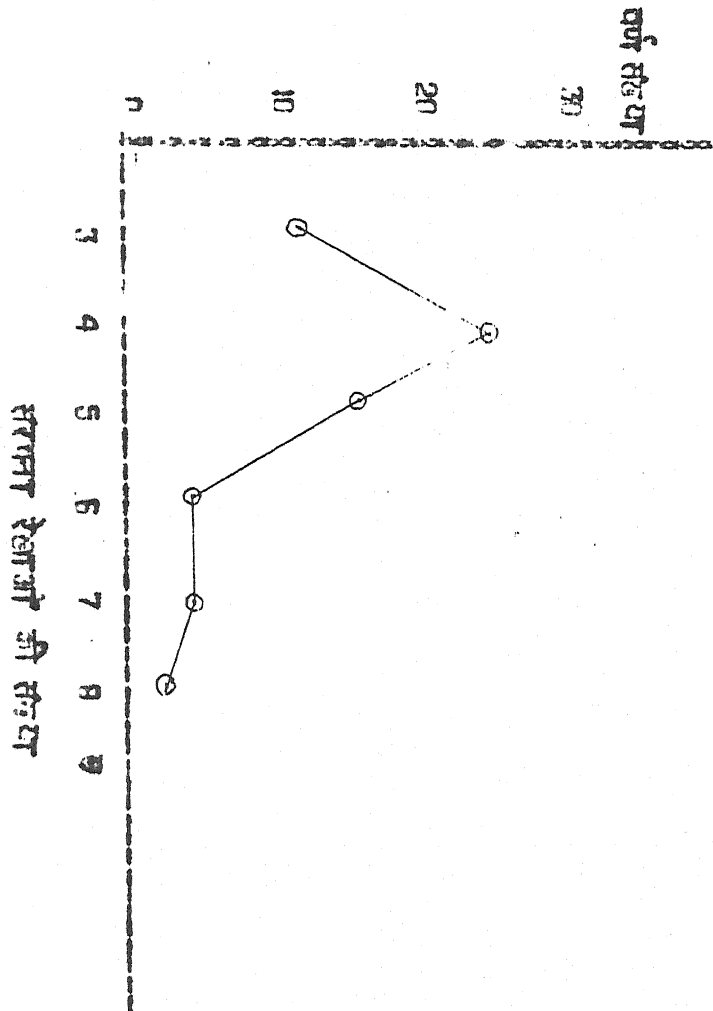
## वर्तमान हिन्दी वर्णमाला की संरचना रेखा संख्या

| 5 | 6 | 5 | 6 | 3 | 4 | 7 | 3 | 4 | 7 | 8 | 6 | 7 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ऋ | ए | ऐ | ओ | औ | अं | अः |

स्वर वर्णों की संरचना रेखाओं का योग - 71।

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | 6 | 3 | 4 | 4 | = | 22 |
| क | ख | ग | घ | ङ | | |
| 4 | 4 | 4 | 7 | 4 | = | 23 |
| च | छ | ज | झ | ञ | | |
| 3 | 3 | 4 | 3 | 3 | = | 16 |
| ट | ठ | ड | ढ | ण | | |
| 3 | 4 | 4 | 4 | 3 | = | 18 |
| त | थ | द | ध | न | | |
| 3 | 4 | 4 | | 4 | = | 19 |
| प | फ | ब | भ | म | | |
| 4 | 3 | 4 | 3 | 4 | = | 18 |
| य | र | ल | व | श | | |
| 4 | 5 | 5 | 6 | 4 | = | 24 |
| ष | स | ह | क्ष | त्र | | |
| | | 6 | | | = | 06 |
| | | ज्ञ | | | योग | 146 |

व्यंजन वर्णों की संरचना रेखाओं का योग = 146

कुल मूल ध्वनि संरचनाओं का योग = 71 + 146 = 217

देवनागरी लिपि के कुल वर्ण संख्या = 48

एक वर्ण की संरचना संख्या का औसत = $\frac{217}{48}$ = 4·5 शिरोरेखा सहित ।

शिरोरेखा रहित वर्ण लिखने पर कुल संरचना रेखा होगी = 217 − 48 = 169

एक वर्ण की औसत संरचना संख्या = $\frac{169}{48}$ = 3.5 शिरोरेखा हटाकर

अंतर = 4.5 − 3.5 = 1 शिरोरेखा प्रति वर्ण कम होती है।

## रोमन लिपि की संरचना संख्या

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| A 5 | B 3 | C 3 | D 2 | E [illegible] | F 6 | = 26 |
| F 5 | G 7 | H 3 | J 3 | K 7 | L 3 | = 28 |
| M 6 | N 5 | O 1 | P 4 | Q 3 | R 5 | = 24 |
| S 4 | T 4 | U 5 | V 4 | W 6 | X 6 | = 29 |
| | | Y 5 | Z 5 | | | = 10 |
| | | | | | योग | = 117 |

रोमन वर्णों की कुल संरचना रेखायें = 117

रोमन लिपि के कुल वर्ण = 26

एक रोमन वर्ण की संरचना संख्या का औसत = $\frac{117}{26}$ = 4.5

निष्कर्षतः हिन्दी वर्ण संरचना रेखाओं का औसत भी 4.5 प्रति वर्ण है जो कि रोमन लिपि के प्रति वर्ण संरचना रेखा के समान है। अतः हिन्दी वर्ण मात्र रोमन वर्णों से किसी भी प्रकार लिखने में अधिक समय नहीं लेती, अंग्रेजी के समान हिन्दी वर्णों का भी द्रुतलेखन किया जा सकता है, परन्तु शिरोरेखा हटाकर हिन्दी वर्ण लिखने पर अंग्रेजी से अधिक शीघ्र लेखन किया जा सकता है क्योंकि शिरोरेखा हटा कर हिन्दी वर्ण [illegible] पर प्रति वर्ण संरचना रेखा का औसत

३·5 प्रति वर्ण संरचना रेखा है । अत: हिन्दी पर यह आरोप मिथ्या ही नहीं भ्रम पूर्ण भी है कि नागरी लिपि का द्रुत लेखन नहीं किया जा सकता, इस कारण यह सहज तथा शीघ्र जनता द्वारा स्वीकार नहीं की जाती । उक्त विवरण से स्पष्ट है कि यह आरोप अंग्रेजी की गुलाम मानसिकता वाले, विदेशी भाषा के पक्षधर व्यक्तियों द्वारा हिन्दी पर थोपा गया है। बंगाल के स्वनाम धन्य श्री केशव चन्द्र सेन जिन्होने 1873 में अपने पत्र " सुलभ समाचार " (बंगाली मे लिखा - " यदि भाषा एक न होने पर भारतवर्ष में एकता न हो तो उसका उपाय क्या है समस्त भारतवर्ष में एक भाषा का प्रयोग करना इसका उपाय है । इस समय भारत में जितनी भी भाषाएं प्रचलित है, उनमें हिन्दी भाषा प्राय: सर्वत्र प्रचलित है, इस हिन्दी भाषा को यदि भारत-वर्ष की एकमात्र भाषा बनाया जाय तो अनायास ही ( यह एकता) शीघ्र ही सम्पन्न हो सकती है ।" यह उद्गार उन्होने हिन्दी की श्रेष्ठता के कारण ही व्यक्त किये थे, अत: हिन्दी सभी दृष्टिकोणों से श्रेष्ठ है उसमें भी यांत्रिक उपकरणों की अनुकूलता शीघ्र लेखन का गुण विद्यमान है ।

--- 0 ---

## हिंदी और अंग्रेजी - एक परिचय



भारत एक कृषि प्रधान देश है। विश्व-क्षितिज में इसकी स्वर्णिम-या- रश्मियां आज भी गहन अंधकार में आलोक बिखेरती है। जहां इसकी सभ्यता-संस्कृति-विकास की विश्व में प्रतिष्ठा है वहीं भारत आज, विदेशी भाषा के कारण अपने गौरव की रक्षा न कर पाये, यह कितना बड़ा दुर्भाग्य है।

यद्यपि भारत में केवल 2 % प्रतिशत लोग ही अंग्रेजी जानते हैं, शेष 98 % प्रतिशत लोग या तो हिंदी जानते है या अपनी प्रादेशिक भाषा जैसे तमिल, तेलुगु, कन्नड़, गुजराती आदि। फिर भी अंग्रेजी भारतीय समाज पर कितना प्रभाव डाले हुये है यह विचारणीय प्रश्न है। अंग्रेजों को भारत छोड़े अर्ध शताब्दी व्यतीत होने को है लेकिन आज भी स्वाधीन भारत में विभिन्न अवसरों पर अपना संदेश राजनेताओं द्वारा एक विदेशी भाषा (अंग्रेजी) में दिया जाता है।

हम भारतीयों के लिये बड़े दुर्भाग्य की बात यह है कि जिनको अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान नहीं होता उन्हें अच्छी नौकरी नहीं मिलती चाहे वे कितने ही योग्य क्यों न हों। परिणाम स्वरूप इस देश में केवल अंग्रेजी का ज्ञान न होने से 98 % लोग अच्छी नौकरी से वंचित रहते हैं। अंग्रेजी उस सेतु की भांति है जो शिक्षा को नौकरी से जोड़ता है।

केवल मुट्ठी भर लोग अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा कायम रखना चाहते है क्योंकि अंग्रेजी अंतर्राष्ट्रीय भाषा है। यह केवल आंशिक रूप से सत्य है। इस प्रकार का तर्क केवल वही लोग देते है जिन्होंने ब्रिटेन और अमेरिका के अतिरिक्त किसी दूसरे देश के बारे में सुना या देखा तक नहीं या अपने जीवन में अंग्रेजी के सिवाय कोई अन्य भाषा पढ़ी नहीं है। हम भारतीय आगन्तुकों सबसे अंग्रेजी में संभाषण करते है चाहे उसकी भाषा जर्मन हो, रूसी हो, चीनी हो या जापानी इसी अभ्यास का परिणाम हुआ कि श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित जब राजदूत

का पद ग्रहण करने जब गयीं, उनके अंग्रेजी में लिखे परिचय पत्र को स्टालिन ने उठाकर फेंक
दिया और पूछा कि क्या आपकी कोई भाषा नहीं है ।

दक्षिण अमेरिका में बीस देश हैं । वहाँ केवल स्पेनिश बोली जाती है ।भारत के समीप
अफगानिस्तान और ईरान में अंग्रेजी बिल्कुल नहीं चलती ।अंग्रेजी ने भारत का दृष्टिकोण संकीर्ण
बना दिया है । विदेशों में होने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं को भारतीय जनता अंग्रेजी अनुवाद
के माध्यम से पढ़ती है । अंग्रेजी का प्रभुत्व इतना प्रभावी है कि सारा संसार हम अमेरिकी
या ब्रिटिश चश्मा चढ़ाकर देखते हैं फलत: हमारी अपनी स्वतन्त्र और निष्पक्ष राय किसी भी
मामले में नहीं बन पाती देश हित में यह आवश्यक है कि हमारे देश की एक ही भाषा हो जिसमें
हम परस्पर संभाषण कर अपने लोक-कार्यों का निस्तारण करते हुये गर्व अनुभव करें तथा हिन्दी
भाषी तथा भारतीय भाषा-भाषियों को प्राथमिकता दें और अंग्रेजी बोलने वालों को भी उन्हें-
उन्हें प्रेम - पूर्वक हिन्दी बोलने के लिए प्रेरित करें हिन्दी तथा भारत की अन्य भाषाओं के प्रति
उन्हें आस्थावान बनायें न कि विदेशी भाषा अंग्रेजी के प्रति । जिस देश की कोई भाषा नहीं
वह देश विश्व में गौरवान्वित नहीं हो सकता लोग तर्क देते हैं कि अंग्रेजी विज्ञान की भाषा है क्यों
कि अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में विज्ञान की उच्च स्तर की पुस्तकें प्रकाशित नहीं होती
आज विज्ञान की जितनी पुस्तकें रूसी भाषा में हैं दुनिया की किसी भाषा में नहीं । जो दुनिया
के देश विज्ञान एवं तकनीक में अग्रसर हैं, क्या वहाँ विदेशी भाषाओं के माध्यम से विज्ञान की
पढ़ाई होती है बिल्कुल नहीं इंग्लैण्ड और अमेरिका में अंग्रेजी भाषा, जर्मनी में जर्मनी, रूस में रूसी,
और जापान में जापानी भाषा में विज्ञान पढ़ाया जाता है ।भारत ही एक देश ऐसा है जहाँ
उसकी अपनी भाषा में विज्ञान नहीं पढ़ाया जाता ।जिन छात्रों को अंग्रेजी आती है केवल वही
विज्ञान पढ़ सकते हैं ।

रूस, जापान, चीन आदि देशों में बड़े-बड़े कुछ वैज्ञानिक जो कि अंग्रेजी का नाम मात्र भी ज्ञान नहीं रखते उन्हें दूसरे देशों में होने वाली वैज्ञानिक प्रगति की जानकारी कैसे मिलती है। उस जानकारी को प्राप्त करने के लिये ये वैज्ञानिक अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं को सीखने में अपना बहुमूल्य समय नष्ट नहीं करते अतः भारत को भी इन देशों से शिक्षा लेकर हिन्दी में विज्ञान की शिक्षा अपने होनहार छात्रों को प्रदान करनी चाहिये। इससे निश्चय ही भारत उन्नति के मार्ग की ओर अग्रसर होगा। दृढ़ निश्चय कर किसी भी असंभव कार्य को संभव बनाया जा सकता है। बस थोड़े संयम तथा दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। लगभग 100 वर्ष पूर्व तक फिनलैण्ड के लोग स्वीडी भाषा का प्रयोग करते थे। उन्होंने एक दिन तय किया कि वे अपनी भाषा में ही सम्पूर्णकार्य करेंगे। बस, दूसरे दिन से ही काम शुरू हो गया और आज फिनी भाषा में सारा कामकाज भली-भांति चल रहा है। जार के समय में फ्रांसीसी भाषा का दब-दबा था। लेनिन ने सत्तारूढ़ होते ही फ्रांसीसी भाषा के वर्चस्व को समाप्त कर दिया। आज रूस में सारा काम काज रूसी भाषा में ही होता है।

क्या अंग्रेजी आधुनिकता की भाषा है "नहीं। तब किसी भी राष्ट्र पर एक विदेशी भाषा को थोपना आधुनिकता के मूलभूत सिद्धांतों के विरुद्ध है। एक स्वतन्त्र तथा आधुनिक राष्ट्र तो वही होगा, जिसमें जनता राजकाज में पूरी तरह से भाग ले। परन्तु स्वाधीन भारत में पंचवर्षीय योजनाएं अंग्रेजी में बनती हैं। स्वाधीन भारत का प्रामाणिक संविधान केवल अंग्रेजी में है। स्वाधीन भारत के मंत्रिमण्डल और संसद की कार्यवाही अंग्रेजी में चलती है। वस्तुतः जिन कामों का जनता से सीधा सम्बन्ध है, वे सब काम उस विदेशी भाषा अंग्रेजी में है जिसे साधारण जनता नहीं समझती। इसीलिये स्वतन्त्रता के वर्षों बाद भी गांव का एक किसान जब संसद की दर्शक-दीर्घा में आकर बैठता है तो उसके लिये संसद का अर्थ मात्र एक विशाल- भवन और बड़-बड़ाते हुये संसद

सदस्यों के सिवाय कुछ नहीं होता ।विडम्बना की बात है कि आज के भारत में जो अंग्रेजी बोलता है उसकी सुनी जाती है, क्यों कि अंग्रेजी बोलना विद्वता की पहचान है।अंग्रेजी में बोलना प्रतिष्ठा की बात है । प्राचीन काल में भारत विज्ञान में बहुत आगे था। भारत संसार का सबसे उन्नत और समृद्ध देश था ,क्या उस काल में भारत में अंग्रेजी थी ।तब उसकी प्रगति का क्या कारण था । उसका कारण था कि उस समय के सभी कार्य भारत की मातृभाषा में करना तथा सभी भारतीय भाषाओं की उन्नति की कामना ।

जहाँ तक अंग्रेजी के व्याकरण और लिपि का प्रश्न है,तो अंग्रेजी हिन्दी से मीलों पीछे है।स्वयं बर्नार्ड शॉ ने अपने नाटक "पिगमेलियन " में अंग्रेजी के उच्चारण का मजाक करते हुये कहा है कि-इस भाषा का ठीक उच्चारण हो ही नहीं सकता ,क्यों कि इसके पास एक पुरानी पिटीपिटी लिपि के अतिरिक्त कुछ नहीं है । जिस भाषा में का उच्चारण "बट" हो का उच्चारण "पुट" हो जाये उस भाषा के व्याकरण की क्या कहो इसी प्रकार एक भाषा शास्त्री ने सिद्ध किया है कि व्याकरण और उच्चारण की दृष्टि से अंग्रेजी दुनिया की सबसे कमजोर भाषाओं में से एक है ।

जहाँ तक भारतीय भाषाओं की शब्द सामर्थ्य का प्रश्न है, अंग्रेजी में जितने शब्द है, उससे कई गुना शब्द अकेली हिन्दी में है। फिर कई भारतीय भाषायें तो हिन्दी से भी अधिक प्राचीन और सम्पन्न है।इन सब भाषाओं और अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों को एक स्थान पर एकत्रित कर ले तो मेरा अनुमान है कि 60 लाख से भी अधिक शब्द होंगे । संस्कृत की एक-एक धातु से सैकड़ों नये शब्द होंगे ।मानव मन की महानतम और सूक्ष्मतम अनुभूतियों को भारतीय भाषायें सहस्त्रों वर्षों से सफलतापूर्वक अभिव्यक्ति करती आ रही है । भाषा के बदलने से मूल्य भी बदल जाते है ।हिन्दी में बड़ों को आप और बराबरी वालों को तुम कहा जाता है,लेकिन अंग्रेजी में सपाट सम्बोधन है यू। हमारे यहाँ चाचा ताऊ ,मौसा,फूफा या चाची ,ताई मौसी ,बुआ -

सब सम्बन्धों के लिये निश्चित शब्द है, लेकिन अंग्रेजी में इन सम्बन्धों को अंकल और आन्टी से ही संबोधित किया जाता है ।

हिन्दी पर आरोप है कि हिन्दी अपने आपमें सम्पूर्ण भाषा नहीं है। इसमें बहुत से अपने शब्द नहीं है जैसे- रेलगाड़ी, लालटेन, ब्रिज आदि शब्दों के लिए कोई उपयुक्त शब्द नहीं है। तो इसका उल्टा भी सत्य है ।जलेबी, कचौड़ी, जनेऊ, घर आदि शब्दों के लिये कौन सा उपयुक्त शब्द है? वास्तव में जो जीवन्त भाषायें है, वे शब्दों की छुआछूत को नहीं मानती है। शब्द जिधर से भी आयें, ग्रहण किये जाने चाहिये ।अंग्रेजी भाषा भी अपने आपमें सम्पूर्ण भाषा नहीं है क्यों कि स्वयं अंग्रेजी में आधे से अधिक शब्द यूनानी, लैटिन और फ्रांसीसी भाषाओं से लिये गये है ।तो फिर हिन्दी भाषा मात्र की उपेक्षा क्यों की जाय । अत: कमी शब्दों की नहीं है संकल्प की है ।यदि अपनी भाषा में संकल्प के साथ काम शुरू कर दिया जाय तो शब्द अपने आप पीछे - पीछे चले आयेंगे । बहुत से लोगों को इस बात की जानकारी नहीं होगी कि ब्रिटेन को छोड़कर यूरोप के बाजारों में आपको एक भी नाम पट अंग्रेजी में नहीं मिलेगा । हर देश के लोग अपनी-अपनी भाषा में ही अपनी -अपनी दुकानों के नाम लिखते है ।

निष्कर्ष यह कि हिन्दी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं तमिल, तेलुगु, मलयालम, का भी विकास करना अंग्रेजी की तुलना में उचित और श्रेष्ठ है। हिन्दी को अंग्रेजी का स्थान लेना चाहिये, अंग्रेजी हटेगी तो उत्तर भारत के लोग दक्षिण की भाषायें सीखेंगे ।हिन्दी प्रतिष्ठा की भाषा बनी तो हिन्दी स्वत: ही पूरे भारत में फैल जायेगी ।अत: देश की उन्नति के लिये अंग्रेजी को समूल हटाना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है ।

× 0 × 0 × 0 ×

-----। की ।-----

प्रश्न संख्या तथा स्वरूप

विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा के प्रचार - प्रसार से आज मनुष्य की सभी दैनिक क्रियायें विज्ञान - निर्मित उपकरण एवं मशीनों पर आश्रित हो गई है। जिस कार्य को कई व्यक्ति पहले महीनों में करते थे। आज वही कार्य एक मशीन अल्प समय में संपादित कर देती है, क्रेन की सहायता से आश्चर्यजनक भार उठाया जा सकता है, पुराने समय की कोलम्बस , वास्कोडिगामा की साहसिक समुद्री यात्रायें जिसे उन्होंने वर्षों में पूरा किया ,वे यात्रायें आज स्वचालित मोटर बोट द्वारा कुछ दिनों में ही पूर्ण की जा सकती है। परिवहन के साधनों ने बस, रेल, हवाई जहाज तथा दो पहियों की गाड़ियों द्वारा मनुष्य को मनुष्य के पास लाने का कार्य किया ,वहीं दूसरी ओर वैचारिक मेल बैठाने में समाचार पत्रों ,रेडियो, दूरदर्शन ,टेलीफोन ,[illegible] , जैसे संचार - माध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । विश्व के किसी भी कोने पर रहने वाला व्यक्ति आज दूरसंचार के माध्यम से देश - विदेश घटनाओं से अवगत हो जाता है । दूर दर्शन के माध्यम से व्यक्ति हजारों किलोमीटर की दूरी पर हो रहे कार्यक्रम को इस प्रकार देखता है जैसे सभी घटनायें पास घटित हो रहे हों। मनोरंजन के साधनों में टेलिस्कोप ,स्वचालित कैमरे , मनुष्य की छवि को वर्षों तक सुरक्षित रखते है ,यदि रामायण काल महाभारत काल में विज्ञान का इतना विकास हुआ होता ,तो आज द्वापर के कृष्ण और त्रेता के राम की सत्य छवि सुरक्षित रहती ।

विज्ञान ने किसी क्षेत्र - विशेष में ही नहीं बल्कि लेखन तथा सूचना प्रेषण के क्षेत्र में भी आश्चर्यजनक प्रगति की है। व्यक्ति को हाथ से नहीं लिखना पड़ता, क्यों

कि इलेक्ट्रोनिक टाईप राईटर की सहायता से वह अपनी इच्छानुसार सुन्दर तथा स्पष्ट अक्षरों में अपने विचारों को अंकित कर सकता है । जहां लेखन कार्य को द्रुतगति से संपादित करने के क्षेत्र में टेलीप्रिण्टर ,टाईपराईटर जैसे यंत्रों ने महत्वपूर्ण सहयोग दिया है, वहीं दूसरी ओर सूचना प्रेषण हेतु मोरोस - तार लिपि ,आई0पी0ए0 ( इंटर नेशनल फोनेटिक अल्फाबेट ) जैसी लिपि उपकरणों ने प्रशंसनीय कार्य किया है । यदि इस प्रकार की सांकेतिक लिपियों का अविष्कार ,उनका विकास न किया जाता तो व्यक्ति -व्यापारिक दृष्टि से एक नहीं हो पाता । देश की रक्षा सीमा पर नियुक्त जवान पर निर्भर होती है उसके संदेश अति महत्वपूर्ण तथा गुप्त होते है, संदेश प्रेषण की निष्क्रियता देश के अस्तित्व को संकट उत्पन्न कर सकती है। देश के जवान तथा देश को परस्पर सम्बद्ध बनाये रखने में वायरलेस सेट संदेश - प्रेषक के रूप में अति महत्वपूर्ण है । इस यन्त्र द्वारा मोरोस लिपि में प्रमुख सूचनाये सैन्य अधिकारियों तथा सम्बद्ध मुख्यालय एवं अधीनस्थ सैनिकों को प्रेषित की जाती है । इस लिपि के प्रत्येक देश के अलग- अलग संकेत होते है, जिससे अपने देश की सूचना दूसरा देश न समझ सके ।

द्रुत लेखन के क्षेत्र में आशुलिपि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है , लम्बे तथा द्रुतगति से बोले गये भाषणों ,अभिभाषणों ,वक्तव्यों को आशुलिपि द्वारा ही द्रुतगति से लिखना सम्भव है क्यों कि इस लिपि के वर्ण हल्की तथा गहरी सरल रेखाओं के रूप में पेंसिल से लिखे जाते है, मात्राये भी वर्ण के साथ ही सरलता से लगायी जाती है ।

विभिन्न यान्त्रिक तथा विशिष्ट अति प्रयोगी लिपियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :-

**टेलीप्रिण्टर :-** इस यन्त्र की सहायता से समाचार पत्रों का प्रकाशन किया जाता है।

Keys in Letters Case

Keys in Figures Case

Non Feed (Dead) Keys

टेलीप्रिण्टर की वर्णमाला एवं संख्या

## 5-Unit Code for Devanagari Teleprinters

| No. | Letters | Figures | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | [illegible] | ै | ● | ● | | | |
| 2 | ग | ट | ● | | | ● | ● |
| 3 | | ↓ | | ● | ● | ● | |
| 4 | रा | भ | ● | | | ● | |
| 5 | ि | ु | ● | | | | |
| 6 | र | 0 | ● | | ● | ● | |
| 7 | ा | श | | ● | | ● | ● |
| 8 | ु | ृ | | | ● | | ● |
| 9 | ब | 5 | | ● | ● | | |
| 10 | ध | . | ● | ● | | ● | |
| 11 | ह | 8 | ● | ● | ● | ● | |
| 12 | ी | 9 | | ● | | | ● |
| 13 | [illegible] | [illegible] | | | ● | ● | ● |
| 14 | द | ण | | | ● | ● | |
| 15 | क | 6 | | | | ● | ● |
| 16 | ि | | | ● | ● | | ● |
| 17 | म | ढ | ● | ● | ● | | ● |
| 18 | ज | 1 | | ● | | ● | |
| 19 | अ | ड | ● | | ● | | |
| 20 | ल | 2 | | | | | ● |
| 21 | प | 4 | ● | ● | ● | | |
| 22 | य | ख | | ● | ● | ● | ● |
| 23 | त | छ | ● | ● | | | ● |
| 24 | च | घ | ● | | ● | ● | ● |
| 25 | न | 3 | ● | | ● | | ● |
| 26 | स | थ | ● | | | | ● |
| 27 | [illegible] | [illegible] | | | | ● | |
| 28 | < | ≡ | | ● | | | |
| 29 | [illegible] | ू | ● | ● | ● | ● | ● |
| 30 | ↑ | | ● | ● | | ● | ● |
| 31 | अंतर छड़ | | | | ● | | |
| 32 | ब | ✠ | | | | | |

< Carriage Return

≡ Line Feed

↓ Letters Shift

↑ Figures Shift

● Marking impulse

□ Spacing impulse

इसमें कागद रीम्बी होती है जिस पर स्वचालित विभिन्न कुंजियों तथा यूनिट कोड के माध्यम से सूचनाये अंकित होती रहती है। यह सूचनाये विभिन्न सूचना केन्द्रों से प्रसारित होती है। जिनको टेलीप्रिन्टर का रिसीवर यथावत् प्राप्त कर अंकित करता रहता है। तदुपरान्त यह सूचना समाचार-पत्र में प्रकाशित की जाती है। यह सूचनाये टेलीप्रिन्टर पर हिन्दुस्तानी लिपि में प्रकाशित होती है।

वर्ण संख्या :- टेलीप्रिन्टर के कुंजी-पटल पर मात्र 28 वर्ण छपे होते है, जिनकी सहायता से शब्दों का निर्माण किया जाता है। इससे सभी स्वर निर्मित हो जाते है।

वर्ण संरचना :- इसमें अ की बारहखड़ी का प्रयोग होता है :- अ, आ, अि, अी, अु, अू, अे, अै, ओ, औ के रूप प्राप्त होते है। देवनागरी और टेलीप्रिन्टर के शब्द देखने से अधिक स्पष्ट हो जायेगा :-

| देवनागरी | टेलीप्रिन्टर | देवनागरी | टेलीप्रिन्टर |
|---|---|---|---|
| इसकी | अिसकी | उसकी | अुसकी |
| ईमानदारी | अीमानदारी | इतिहास | अितिहास |
| ऊनका | अूनका | एक | अेक |
| उधार | अुधार | उन्नति | अुन्नति |

इसमें नागरी लिपि की भाँति आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, जैसे स्वरों तथा ङ, ञ, ऋ, ठ, ढ़, क्ष, त्र, ज्ञ, जैसे व्यंजनों का अभाव है। और शेष वर्ण नागरी लिपि की ही भाँति प्रयोग किये जाते है, तथा उनकी संरचना भी नागरी लिपि की भाँति है।

इसमें नहीं है उसके स्थान पर " वर्ण को लगाया जाता है। तथा इसकी अनुसार बिन्दी न होकर ॐ उभरे हुये रूप में होती है। इसकी समस्त मात्राओं का भी बिन्दुगत उभरा हुआ स्वरूप होता है।

आशुलिपि

इसको रोमन लिपि में शार्ट हैण्ड कहते हैं। इस लिपि के अविष्कर्ता सर आईजक पिटमैन थे। जिन्होंने बड़े परिश्रम से इसको 1837 में तैयार किया। इसी प्रणाली के आधार पर 1922 में श्री ऋषि लाल अग्रवाल के मन में एक हिन्दी आशुलिपि तैयार करने का विचार उठा। उस समय आप अंग्रेजी शार्ट हैण्ड के अच्छे ज्ञाता थे। अन्त में कठिन परिश्रम करते-करते आपने " ऋषि प्रणाली " के नाम से आशुलिपि तैयार कर ली जो 1938 में प्रकाशित हुई तथा भारत सरकार ने 1947 में इसको मान्यता प्रदान की।

इस लिपि में मोटी तथा पतली रेखाओं द्वारा ही वर्णों में परिवर्तन आ जाता है। इसमें " ष" का उच्चारण "श" से श का "स" से तथा "ण" का न से क्ष का छ से ज्ञ का ग, य, ऋ का र त्र का तर से काम लिया जाता है। इसका कारण इन वर्णों के लिए इस लिपि में कोई अलग से वर्ण नहीं है। स्वरों के लिए केवल बिन्दु या डैश प्रयोग में लाते हैं। इसको पढ़ने के लिए इन वर्णों [चिन्हों] का उचित स्थान पर संदर्भ गत प्रयोग ही उच्चारण ठीक कराता है।

स्वर :- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ की केवल मात्राओं का प्रयोग होता है, वर्ण रचना का कोई चिह्न नहीं होता है। किन्तु लिखने में मात्रा का चिह्न अंकित करते हुये उसका उच्चारण किया जाता है।

# देवनागरी - आशुलिपि वर्ण - स्वरूप

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| कवर्ग | क | ख | ग | घ |
| चवर्ग | च | छ | ज | झ |
| टवर्ग | ट | ठ | ड | ढ |
| तवर्ग | त | थ | द | ध |
| पवर्ग | प | फ | ब | भ |
| | य | र | ल | व |
| | स | ह | म | न |
| | ण | | ङ | |

**अनुपलब्ध वर्णों का विकल्प** :- इसमें अनुपलब्ध वर्ण जैसे झ , ञ, ठ आदि का विकल्प निम्नानुसार है :-

| नागरी वर्ण | टेलीप्रिंटर वर्ण | विकल्प |
|---|---|---|
| झ | म : = म़ | " म " में नुक्ता लगाकर बनाते हैं। |
| ठ | नहीं है | " ट " |
| छ | नहीं है | छ |
| त्र | नहीं है | तु |

**मात्राएं** :- टेलीप्रिंटर में सभी स्वरों की निर्दिष्ट मात्रायें है जिनका प्रयोग नागरी लिपि की भांति किया जाता है ।

## देवनागरी - ब्रेल लिपि

इस लिपि का जन्म फ्रांस देश के एक नेत्र हीन अध्यापक लुई ब्रेल द्वारा सन् 1929 में हुआ । ब्रेल का जन्म 1809 में तथा स्वर्गवास 1852 में हुआ । भारत सरकार ने हिन्दी -ब्रेल का निर्माण किया । इस लिपि में छ: बिन्दु ⠿ इस प्रकार होते है । तथा सम्पूर्ण लिपि इन्हीं छ: बिन्दुओं पर आधारित है। तथा इनकी गणना बाईं ओर से नीचे से ऊपर की ओर 1 , 2 , 3 की जाती है । तत्पश्चात दाहिनी ओर के बिन्दु ऊपर से नीचे की ओर गिने जाते है 4, 5, 6, यह बिन्दु बाईं ओर के किनारे पर मोटे कागज में उभरे हुए होते है जिनको छूकर नेत्रहीन विद्यार्थी पढ़ लेता है । इन छ: बिन्दुओं की सहायता से नागरी लिपि का सरलता पूर्वक पाठ किया जा सकता है ।

वर्ण संख्या :- देवनागरी लिपि की भांति ही है । किन्तु संयुक्त ध्वनि " क्ष " आदि का

## नेत्र हीनों के लिए ब्रेल लिपि

| ३००४<br>२००५<br>१००६ | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | ओ | औ |
| क | ख | ग | घ | ङ | च | छ | ज | झ | ञ |
| ट | ठ | ड | ढ | ण | त | थ | द | ध | न |
| प | फ | ब | भ | म | य | र | ल | व | |
| श | ष | स | ह | क्ष | ज्ञ | ड़ | ढ़ | ऋ | ॰ ॅ |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |

फलक संख्या – ९८

वर्ण संख्या :- इस लिपि में स्वर मात्राओं के रूप में प्रयुक्त होते हैं तथा केवल वर्ण पूर्ण बनाया जाता है जिससे वर्ण संख्या कम हो जाती है। आशुलिपि का शीघ्रलेखन सरल खड़ी रेखाओं के कारण ही जाता है। इसमें वर्णों की संख्या मात्र ३० होती है। देवनागरी के कुछ उच्चारणों का अभाव है।

## -: देवनागरी तार संकेत प्रणाली :-

देवनागरी तार संकेत लिपि का अविष्कार सबसे पहले भारत में आगरा तारघर के श्री डी० लाल मेहता महोदय ने किया। उनकी अविष्कार की हुई संकेत लिपि " मेहता तार संकेत लिपि के नाम से प्रसिद्ध है। दिल्ली स्थित तार विभाग के डायरेक्टर जनरल के कार्यालय में उसका प्रयोग किये जाने पर वह अधूरी साबित हुई, इसलिए स्वीकार नहीं की गई। उसी संकेतलिपि का सुधार और संशोधन आगरा तारघर के ही कर्मचारी पं० मनोहर लाल शर्मा ने किया। इस संशोधन में एक दोष यह रह गया कि संकेत बहुत लम्बे थे। " शर्मा लिपि" को संक्षिप्त करने तथा सुधारने के लिए तार कर्मचारियों के सहयोग से चार आदमियों की एक समिति बनाई गई। जिसके सदस्य थे सर्व श्री संगम प्रसाद गुप्ता, शालिग्राम मिश्र, एडविन राय शुक्ल और वी०पी० अवारी। यह भी हिन्दी के लिए गौरव की बात थी कि तार संकेत लिपि बनाने वाली समिति के चार सदस्यों में श्री शुक्ल और अवारी ईसाई और मुसलमान थे। इस समिति के आगरा तारघर के मास्टर श्री श्रीनिवास जी की देखरेख में कई मास तक इसी पर प्रयोग किए थे। ये प्रयोग कभी रात-रात भर चलते थे। समिति के सदस्य आठ- आठ घंटे तारघर में काम करने के बाद कभी -कभी दस - दस घंटे रात में तारघर पर देवनागरी तार संकेत के प्रयोग में जुटे रहते। इन राष्ट्रीय आत्माओं

# देवनागरी तार संकेत निर्देशिका

| वर्ण | | आधार संकेत | परिवर्तक संकेत | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | • | — | •• |
| K | क | — • — | ख | क् | ख् |
| G | ग | — — • | घ | ग् | घ् |
| C | च | — • — • | छ | च् | छ् |
| J | ज | • — — — | झ | ज् | झ् |
| | ट | • — • — | ठ | ट् | ठ् |
| | ड | • • — — | ढ | ड् | ढ् |
| W | त | • — — | थ | | |
| | द | — — • • | ध | द् | ध् |
| N | न | — • | ं | न् | ँ |
| P | प | • — — • | फ | प् | फ् |
| B | ब | — • • • | भ | त् | भ् |
| M | म | — — | ण | म् | ण् |
| Y | य | — • — — | | य् | |
| R | र | • — • | ्र , ^ | ˎ ᶜ | ऋ |
| L | ल | • — • • | | ल् | |
| V | व | • • • — | | व् | |
| S | स | • • • | श | स् | श् |
| H | ह | • • • • | ष | ह् | ष् |
| Q | क्ष | — — • — | त्र | क्ष् | त्र् |
| X | ज्ञ | — • • — | श्र | ज्ञ् | श्री |

| वर्ण | आधार संकेत | परिवर्तक संकेत | | |
|---|---|---|---|---|
| | | • | — | •• |
| A T | • — | T: | अ | आ |
| D ि | — • • | ी | इ | ई |
| U ु | • • — | ॢ | उ | ऊ |
| F े | • • — • | ॆ | ए | ऐ |
| O ो | — — — | ौ | ओ | औ |
| ट | — — — • | | | |

| ड़ = • •• | द़ = •• • | । = •• —•• | – = —•••• — | मैं = — — — — |
|---|---|---|---|---|

## रोमन लिपि संकेत निर्देशिका

| वर्ण | आधार संकेत | वर्ण | आधार संकेत | वर्ण | आधार संकेत |
|---|---|---|---|---|---|
| A | • — | I | • • | Q | — — • — |
| B | — • • • | J | • — — — | R | • — • |
| C | — • — • | K | — • — | S | • • • |
| D | — • • | L | • — • • | T | — |
| E | • | M | — — | U | • • — |
| F | • • — • | N | — • | V | • • • — |
| G | — — • | O | — — — | W | • — — |
| H | • • • • | P | • — — • | X | — • • — |

| • -गर | Y = — • — — | Z = — — •• | — गट |
|---|---|---|---|

की तपस्या सर्व प्रथम । जून 1949 ई० को सफल हुई और उसी का फल है कि आज हिन्दी में हम तारों का आदान - प्रदान करते है ।

**देवनागरी तार लिपि की श्रेष्ठता :-** देवनागरी तारलिपि रोमन लिपि से अधिक महत्वपूर्ण सुन्दर और कम खर्चीली है। इसके द्वारा हिन्दी के तद्भव, तत्सम सभी प्रकार के शब्द ज्यों के त्यों शुद्ध रूप से भेजे जा सकते है। व्यापारिक दृष्टि से भी देवनागरी तार संकेत लिपि रोमन तार संकेत लिपि से अधिक महत्व रखती है। वस्तुओं के भाव, मूल्य, और तौल सब उसी प्रकार से भेजे जा सकते है, जैसे लिखे जाते है, इसके अतिरिक्त अंग्रेजी के शब्द भी इस लिपि में ज्यों के त्यों भेजे जा सकते है।

**हिन्दी में तार देने के नियम :-** निम्नानुसार है :-

1- प्रत्येक शब्द या संयुक्त शब्द "तार में एक ही शब्द गिना जायगा, यदि उसमें मात्राओं को छोड़कर 10 से अधिक अक्षर न हों, परन्तु केवल स्वर, जैसे आम में "आ" एक अक्षर माना जायेगा। इसी प्रकार अर्द्ध व्यंजन जैसे सस्ता में " स " एक अक्षर माना जाता है

2- पांच या कम अंकों की संख्या के समूह एक-एक शब्द गिने जायेंगे ।

3- पूरा क्रिया पद एक शब्द माना जाता है - जैसे " जा रहा " है " आ रहा " है आदि एक शब्द के रूप में गिना जायेगा ।

4- विभक्तियों को पृथक नहीं गिना जाता है जैसे - राम का" या मकानपर" एक शब्द के रूप में गिने जाते है ।

5- टेलीफोन आफिस [तारघर] का नाम एक शब्द गिना जायेगा । 10 अक्षरों तक के संयोग से बने शब्दों की गणना इसी प्रकार की जायेगी ।

**संकेतलिपि में वर्ण रचना :-**

<u>संकेत लिपि में वर्ण - रचना</u> :- इसमें वर्णों की रचना "." और "—" के अनुसार होती है :- जैसे

| वर्ण | संकेतलिपि में निर्मित वर्ण |
|---|---|
| क | —·— |
| ख | — — · |
| ग | · — — — |
| द | — — · · |
| ब | — · · · |

इस प्रकार इस लिपि का आधार यही डैश और डाट है।

<u>निष्कर्ष</u> :- उक्त वर्णित तथ्यों से स्पष्ट है कि नागरी लिपि में टेली प्रिण्टर लिपि की भाँति ग में, न्याकर ड बनाया जा सकता है जैसा कि पूर्व में बनता था ठ का विकल्प ट ह का विकल्प ञ ग का विकल्प ङ पर विचार किया जा सकता है। फिर विकल्प तो विकल्प होते हैं उनमें मूल ध्वनि की सी पूर्णता कहाँ किन्तु यदि नागरी लिपि के टंकण-यन्त्र के ? कुंजी-पटल पर कुछ शब्द कम करने हैं तो हमें इसी तरह के विकल्पों का सहारा लेना पड़ेगा। हम पूर्ण ध्वनियाँ भी चाहें और वह भी वैदिक संस्कृत तथा विश्व की समस्त भाषाओं के अनुकूल और यह सोचें हिन्दी लिपि में वर्ण अथवा ध्वनियों की संख्या कम हो तो यह दिवा स्वप्न है जो कि असम्भव है।
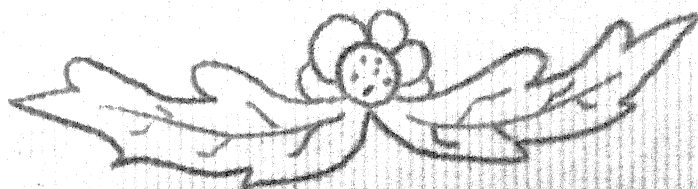
## -: हिन्दी के सार्वदेशिक स्वरूप का विकास :-

सभ्यता का विकास भाषागत विकास का पर्याय होता है। सभ्यता की वह सांस्कृतिक परिणति अपनी अभिव्यक्ति के लिये पारिस्थितिक परिवेशों के अधीन एक ऐसी भाषा का विधान करती है जो उसकी सभ्यता की समस्त वाहिका बन सके। इस रूप में समान संस्कृति और समान भाषा की संरचनायें एक-दूसरी से अपरिहार्य रूप में एकान्वित हो जाती है।

भारतीय संस्कृति का निर्माण और विकास एक विशिष्ट भौगोलिक एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में हुआ है। छिट-पुट प्रादेशिक विभेदों के होते हुये भी कश्मीर से कन्याकुमारी और कच्छ से कामरूप तक भारतीय संस्कृति की आत्मा एक रही है और इसी के अनुरूप अखिल भारतीय भाषा का निर्माण भी स्वतः होता आया है। संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश काल तक राष्ट्रभाषा के विकास की यही परम्परा अक्षुण्य रही है। ईसा की 10वीं शताब्दी के आसपास अनेक कारणों से आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास-क्रम परिलक्षित होता है, किन्तु इन विभिन्न भाषा प्रदेशों के बीच संपर्क या एकता स्थापित करने की एक अन्तर्धारा के रूप में हिन्दी भाषा का कोई न कोई रूप-भेद व्यवहार में रहा है। हिन्दी मध्यदेश-भारत के हृदयस्थल-की भाषा होने तथा अपने में कई बोलियों और उपभाषाओं को साथ लेकर विशाल भू भाग की व्यवहार की भाषा होने के कारण भी राजनैतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्रों में भारत के अन्य भाषा प्रदेशों से भी किसी न किसी रूप में संबद्ध रही है।

हिन्दी की सार्वदेशिक व्यापकता को प्रश्रय देने वाली परिस्थितियों और हिन्दी के सार्वदेशिक स्वरूप पर विचार करना आवश्यक है कि आखिर वे कौन सी परिस्थितियाँ थी जिस कारण हिन्दी अन्य भाषा-भाषी प्रदेशों से जुड़ी रही वे परिस्थितियां निम्न हैं-

हिन्दी की व्यापकता के प्रमुख कारणों में सांस्कृतिक, धार्मिक, साहित्यिक, व्यापारिक, राजनैतिक प्रमुख है।

सांस्कृतिक दृष्टि से सारा भारत हमेशा एक ही रहा है। विविधता में एकता ही भारतीय संस्कृति की अनुपम विशेषता है। इसकी विविधता में एकता के अनेक तत्व विद्यमान है जो इसकी मौलिक एकता के प्रतीक है। भारत के विभिन्न प्रदेशों में विविध धर्मों के जो तीर्थस्थल है वे भारत के सांस्कृतिक एकता के आधार-स्तम्भ है। भारत के धार्मिक जीवन में इन तीर्थस्थानों का विशिष्ट महत्व रहता है। दूर-दूर प्रदेशों से तीर्थयात्री इन तीर्थ स्थानों में आते रहते है। हिन्दुओं के कुछ प्रमुख तीर्थस्थान हिन्दीभाषी प्रदेश में स्थित है जैसे काशी, हरिद्वार आदि। भारत के सभी भागों से तीर्थयात्री इन तीर्थस्थानों में पहुंचते है।

इसी तरह से हिन्दी - प्रदेश के भक्त भी पूर्व दक्षिण में तीर्थस्थानों और धामों की यात्रा के लिये आया-जाया करते थे । इन केन्द्रों में आदान - प्रदान की भाषा के रूप में हिन्दी का ही अधिकतर व्यवहार होता था ।इस प्रकार इन सांस्कृतिक परम्पराओं से हिन्दी की सार्वदेशिकता को बढ़ने का अवसर मिला ।

देश के एक छोर से दूसरे छोर तक यात्रा करने वालों को किसी एक सामान्य भाषा का सहारा लेना पड़ता था । उन दिनों एक सामान्य व्यापक भाषा केवल हिन्दी थी जो उत्तर- दक्षिण ,पूर्व-पश्चिम के तीर्थयात्रियों के बीच में बातचीत की सामान्य भाषा थी । विशेषकर दक्षिण और उत्तर के सांस्कृतिक सम्बन्ध की दृढ़ शृंखला के रूप में हिन्दी भाषा सशक्त माध्यम बनी थी ।सच्चाई तो यह है कि जनभाषा किसी के बनाये नहीं बनती ,परन्तु उसको सांस्कृतिक और धार्मिक परिस्थितियां सदियों से स्वरूप देती हैं । हमारे देश की सांस्कृतिक परम्पराओं को अक्षुण्य रखने में संस्कृत,पालि,प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं के बाद हिन्दी को व्यापक रूप धारण करने का अवसर मिला है ।

भारत में समय-समय पर अनेक धर्मों और मत-मतान्तरों का जन्म हुआ है । बहुत ही प्राचीन काल से इस देश के जनजीवन को विविध धर्म प्रभावित करते आये हैं ।धर्म प्रचारक आचार्य अपने धर्म के व्यापक प्रचार के लिए जन-भाषा या लोकभाषा का आश्रय लेते थे ।बौद्ध धर्म का प्रचार लोक भाषा पालि में हुआ और जैन धर्म का प्रचार प्राकृतों के माध्यम से हुआ।भारतीय धार्मिक इतिहास में यह महत्वपूर्ण घटना है धर्म को लोकप्रिय बनाने के लिये आचार्यों ने संस्कृत को छोड़कर तत्कालीन लोकभाषा का आश्रय लिया । दक्षिण के वैष्णव भक्ति आन्दोलन की व्यापकता का रहस्य भी आचार्यों द्वारा जनभाषा को अपनाना था । इसी प्रकार उत्तर भारत में मध्य युग में वैष्णव आचार्यों और सूफी सन्तों ने अपने भक्ति-संप्रदायों के विचारों के प्रचार के लिए जनभाषा हिन्दी को चुना । इन धार्मिक आन्दोलनों के परिणामस्वरूप हिन्दी की व्यापकता को बल मिला । इन आन्दोलनों में निर्गुण सन्त मत, सूफी धर्म और वैष्णव धर्म सर्वप्रमुख है ।

निर्गुण संतों ने अपने सिद्धांतों के प्रचार के लिए एक मिली-जुली भाषा अथवा सधुक्कड़ी हिन्दी को अपनाया । इन्होंने संत मत प्रचार के लिए खड़ी बोली को इसलिए अपनाया कि वे हिन्दु और मुसलमानों के बीच के भेद-भाव को समाप्त करना चाहते थे । उन्होंने जानबूझकर संस्कृत या फारसी को नहीं अपनाकर उस समय की लोकभाषा हिन्दी को अपनाया " संतों की भाषा प्रारम्भ से ही एक व्यापक भाषा थी,इसलिए विचारों के आदान - प्रदान के लिये अहिन्दीभाषी प्रदेशों में भ्रमण करते समय संत लोग इसी भाषा का अधिक प्रयोग करते थे ।संतों की वाणी के प्रति जन साधारण का स्वाभाविक आकर्षण रहता था

इस प्रकार संत-समागम से हिन्दी का प्रचार बढ़ता गया और यह भाषा अहिन्दी भाषी प्रदेशों में अधिक से अधिक व्यापक बनती गई ।

संत एक प्रदेश में न रहकर पूरे देश में घूमकर अपने विचारों का प्रतिपादन करते थे। उनके लिये जाति या भाषा का प्रश्न नहीं था। वे जहां जाते थे, वहां की जनभाषा को अपनाते थे ।अपने विचारों को दूसरों तक पहुंचाने के लिये सीधी-सादी और सुबोध भाषा को काम में लाते थे। इसलिए पूरे देश के संत अपनी प्रादेशिक सीमाओं से बाहर जाते समय हिन्दी का प्रयोग करते थे ।इस बात के प्रमाण है कि हिन्दी के अतिरिक्त महाराष्ट्र, पंजाब और गुजरात के संतों ने भी अपनी वाणी का माध्यम हिन्दी को बनाया । ये निर्गुण सन्त और साधु वास्तव में हिन्दी के आदि प्रचारक रहे ।

हिन्दी की व्यापकता और लोकप्रियता का एक कारण साहित्य एवं संगीत की दृष्टि से उसकी संपन्नता भी है । दक्षिण की भाषाओं को छोड़कर भारत की अन्य भाषाओं से हिन्दी की इतनी अधिक समता है कि अन्य भाषा-भाषी बहुत कम श्रम से इसको अवश्य समझ लेते थे । विभिन्न प्रदेशों के साहित्यकारों ने जब भक्ति-साहित्य रचा तब वे ब्रज और अवधी अवधि के मोह से छूट नहीं सकते थे । इस बात के कई प्रमाण है कि हिन्दीतर प्रदेशों के बहुत से कवियों ने ब्रज और अवधी से मोहित होकर उनमें साहित्यिक रचनाये प्रस्तुत की है ।ब्रज की कोमलकान्त पदावली हर एक साहित्यकार और रसिक को अनायास ही आकृष्ट करने वाली थी ब्रज भाषा संगीत के लिए भी सक्षम और सफल थी । साहित्य के समान संगीत-प्रेमी भी ब्रजभाषा से आकृष्ट रहा करते थे । लगभग सभी प्रदेशों के संगीतज्ञ शास्त्रीय संगीत में सूरदास के पद ही गाते थे । क्यों कि ब्रजभाषा संगीत और साहित्य दोनो के लिये अनुकूल भाषा समझी जाती थी हिन्दीतर प्रदेशों के विविध साहित्यकारों द्वारा हिन्दी के प्रयोग से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हिन्दी की साहित्यिक सुगमता और सम्पन्नता को देखकर ही अनेक अहिन्दीभाषी कवियों ने अपनी रचनाओं में हिन्दी को स्थान दिया ।

हिन्दी को देशव्यापी बनाने में एक दूसरा स्त्रोत व्यापारिक रहा है । हिन्दी को चिरकाल से व्यापारियों का प्रश्रय मिला है ।मुगल शासन काल में देश की शासन व्यवस्था सुगठित होने से व्यापार, शिक्षा, साहित्य और कला के क्षेत्र में उन्नति हुई । उन दिनों प्रमुख व्यापारिक केन्द्र हिन्दी प्रदेश में स्थित थे और उनका व्यापारिक दृष्टि से अधिक महत्व था ।इन व्यापारिक केन्द्रों में देश के विभिन्न भागों से व्यापारी लोग आया करते थे ।हिन्दी प्रदेश में स्थित पटना, आगरा, बनारस, लखनऊ, दिल्ली आदि बहुत ही प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र थे और यहां पर विविध भागों से व्यापारी आ पहुंचते थे ।और इन केन्द्रों में लेन-देन के लिये हिन्दी का आम व्यवहार होता था ।हिन्दी प्रदेश के व्यापारिक महत्व

के इन नगरों में दूसरे ग्रामों ,कस्बों और नगरों के मजदूरों एवं जुलाहों की बहुत बड़ी संख्या इकट्ठी होती थी । विभिन्न बोलियां बोलने वाले ये लोग आपसी व्यवहार और लेन देन के लिए किसी एक सामान्य भाषा का ही प्रयोग करते थे और वह बोली आगरा, दिल्ली की खड़ी बोली ही हो सकती थी ।

हिन्दी के विकास में राजनीतिक परिस्थितियों और गतिविधियों का भी बड़ा हाथ रहा है ।यह स्वाभाविक है कि जब किसी बोली या भाषा को राजाश्रय प्राप्त होता है तब उसे सभी प्रकार से विकसित होने के लिये अनुकूल पृष्ठभूमि मिलती है । हिन्दी के उद्भव के समय राजनीतिक स्थिति बड़ी सोचनीय थी । विदेशी तुर्कों के आक्रमण के बाद जब उन्होंने देश पर अपना शासन स्थापित कर लिया तब हिन्दी को कोई राज संरक्षण नहीं मिला। इन शासकों की मातृभाषा तुर्की और राजभाषा फारसी थी ।इसलिए उन्होंने देश की जनभाषा हिन्दी की ओर ध्यान नहीं दिया ।लेकिन सम्राट अलाउद्दीन खिलजी के समय से हिन्दी के प्रति शासकों की दृष्टि बदली उसी समय अमीर खुसरो हुये जो खड़ी बोली के प्रवर्तक कवि माने जाते है ।खिलजी वंश के काल में उत्तर भारत की सर्वमान्य भाषा खड़ी बोली दक्षिण में गई और दक्षिण के राज्यों का उसे संरक्षण मिला ।यह दक्षिण में साहित्य शासन और बोल चाल की भाषा बनी ।मुगल बादशाहों का जब शासन स्थापित हुआ तब हिन्दी के विकास के लिये अनुकूल वातावरण मिला । बहुत से मुगल शासक कला प्रेमी और साहित्य प्रेमी थे ।और उन्होंने हिन्दी को भी दरबारों में प्रश्रय दिया । मुगल साम्राज्य के वास्तविक संस्थापक सम्राट अकबर के शासनकाल में हिन्दी को बड़ा प्रोत्साहन मिला । अकबर स्वयं हिन्दी कविता से बहुत प्रेम रखते थे । हिन्दी कवियों का बड़ा सम्मान करते थे । अकबर के बाद जहांगीर के समय में भी हिन्दी कविता को राजाश्रय प्राप्त हुआ । शाहजहां के काल में भी हिन्दी के विकास के लिए प्रोत्साहन मिला । औरंगजेब ने भी दरबार में हिन्दी कवियों को स्थान दिया । इस प्रकार मुसलमान शासकों को हिन्दी अपनाते देखकर अनेक हिन्दू राजाओं ने भी हिन्दी कवियों को भी अपने दरबार में राजाश्रय दिया रीतिकालीन हिन्दी कवि सभी राजाश्रित थे ।जिससे हिन्दी के व्यापक होने तथा साहित्य की मुख्य भाषा बनने में सहायता मिली ।

चूंकि दिल्ली सैकड़ों वर्ष से भारत की राजधानी रही है, अत: उसका सारे देश से राजनीतिक सम्बन्ध रहा है । ऐसी स्थिति में दिल्ली की बोली को प्रधानता मिलना बड़ी स्वाभाविक बात थी ।मुस्लिम शासकों के कर्ता-धर्ता प्राय:अहिन्दी भाषी क्षेत्र में भी जाया करते थे और उनके साथ-साथ उनकी भाषा भी जाती थी ।इन शासकों की सेनाओं में अधिकतर सैनिक हिन्दी क्षेत्र के ही होते थे ।इस प्रकार ये अत्युक्ति नहीं है कि हिन्दी को

अखिल भारतीय भाषा का स्वरूप देने मे मुस्लिम साम्राज्य का भी बहुत बड़ा हाथ रहा है । इसलिए जहाँ - जहाँ मुस्लिम साम्राज्य का विस्तार हुआ वहाँ-वहाँ हिन्दी का भी प्रवेश हुआ ।

इस प्रकार उक्त कारणो से हिन्दी को अपना सार्वदेशिक स्वरूप प्राचीन काल से विदेशी शासको , मुगल सल्तनत के बादशाहों से प्राप्त हुआ, हिन्दी की उनके शासनकाल मे प्रशंसनीय प्रगति हुई । किन्तु दुर्भाग्य यह कि अपने ही देश के शासकों राजनेताओं के द्वारा हिन्दी को पर्याप्त प्रचार - प्रसार का सुअवसर प्राप्त नहीं हुआ, जो भी हिन्दी के विकास के लिये नियम अधिनियम पारित हुये वे कोरे कागजी प्रयास के सिवा और कुछ नहीं हिन्दी-भाषा-लता आज अपने ही देशोद्यान के संरक्षकों द्वारा कुचली जा रही है।शोध का वर्ण्य-विषय इसे अधिक विस्तार मे ले जाना नहीं है फिर भी पूर्व की हिन्दी की उन्नतिशील और वर्तमान की दयनीय स्थिति का दिग्दर्शन करा देना हिन्दी विकास के लिये उचित होगा ।

विज्ञान के सभी क्षेत्रों में एक समान प्रयोग्य हो जाती है और मानकीकृत भाषा सारे राष्ट्र की भाषा हो जाती है ।

## हिन्दी का मानकीकरण

हिन्दी का मानकीकरण हो रहा है वर्ण, वर्तनी, शब्द-रूप, वाक्य-विन्यास और अर्थ की विभिन्नता में एकता-स्थापन मानकीकरण के मेरुदण्ड हैं। इसकी अनेकता में एकता के स्थापन के लिए क्या आधार माना जाय । किसी प्रदेश के अथवा संपूर्ण राष्ट्र के अधिकांश भाग में जो विकल्प मान्य हो, उसे ही मानक भाषा के रूप में स्वीकार करना उचित है । इस प्रक्रिया में एक को ग्रहण करना होता है, तो दूसरे को छोड़ना पड़ता है। उदाहरणार्थ - हिन्दी-प्रदेशों में पहले " " " " रूपों का प्रचार था, किन्तु लेखन की सुविधा की दृष्टि से अब [illegible] रूप स्वीकार कर लिये गये ।

भाषा के मानक रूप का मुख्य कार्य है - उस भाषा को पूरे क्षेत्र में बोधगम्य बनाये रखना सम्पूर्ण क्षेत्र के लोगों की मान्यता ही उस भाषा या शब्द रूप को मानक बनाती है जो रूप अमान्य होते हैं, उन्हें अमानक मान लिया जाता है। मानकीकृत भाषा में अमानक रूप अशुद्ध माने जाते हैं ।

राजभाषा के स्तर पर हिन्दी के मानकीकरण की समस्या मुख्यत: प्रशासनिक शब्दावली सम्बन्धी है। राजभाषा हिन्दी की हिन्दी में तीन शैलियों का प्रचार हो रहा है - 1- संस्कृत की ओर झुकी हुई, 2 - फारसी या अंग्रेजी की ओर झुकी हुई, 3 - लोक-भाषा की ओर झुकी हुई, इसके क्रमश: उदाहरण हैं - 1 - कार्यालय 2- दफ्तर या आफिस 3- आफिस । इसी प्रकार न्यायालय 2 - अदालत 3 - कचहरी ।

एक समस्या यह है कि हिन्दी - भाषी प्रदेशों ने अपनी - अपनी प्रशासनिक

शब्दावलियाँ निर्मित कर ली हैं, जिनमें बहुत कुछ भिन्नता है। राजभाषा हिन्दी में एकरूपता लाने के लिये विभिन्न शब्द-रूपों में से एक अर्थ के द्योतन के लिये किसी एक ही शब्द को चुनना होगा। उदाहरणार्थ, अंग्रेजी के "एग्रीमेंट" शब्द का अर्थ प्रकट करने के लिए केन्द्र "सहमति" मध्य प्रदेश "सम्मति", उत्तर प्रदेश "मेल" तथा " बिहार रजामंदी का प्रयोग कर रहे हैं। मानकीकृत हिन्दी में इनमें से किसी एक ही शब्द को ग्रहण किया जा सकता है, अथवा इन सबके स्थान पर किसी अन्य शब्द को लिया जा सकता है, जिसे भारत राष्ट्र के अधिकतर लोग जानते मानते हों।

## - : हिन्दी के मानक तथा अमानक प्रयोग : -

मानक हिन्दी में वैकल्पिक श्रुति "य" की आवश्यकता नहीं समझी गयी। "य" वाले कुछ शब्द-रूपों के मानक शब्द कोष्ठक में दिये जा रहे हैं :-

1 - संज्ञा - रुपये (रुपए), किराये (किराए), अनुयायी (अनुयाई)।

क्रिया- विशेषण - नये (नए), नयी (नई), सोयी (सोई), खायी (खाई) जायेगी (जाएगी) लीजिये (लीजिए), चाहिये (चाहिए)।

अव्यय - के लिये (के लिए)

2 - जिन शब्दों की समाप्ति हलन्त से होती है, और बिना अर्थ-परिवर्तन हुए यदि उन्हें स्वरान्त किया जा सकता हो, उन्हें हलन्त न करके स्वरान्त कर देना मानक हिन्दी में ग्राह्य है -

पृथक् (पृथक), सम्राट् (सम्राट), महान् (महान)।

अर्थात् (अर्थात), पश्चात् (पश्चात), परिषद् (परिषद)।

3 - देवनागरी की उच्चारण-सम्बन्धी भेदकारी शक्ति की सम्पन्नता-वृद्धि के लिये

शब्दावलियाँ निर्मित कर ली है, जिनमें बहुत कुछ भिन्नता है। राजभाषा हिन्दी में एकरूपता लाने के लिये विभिन्न शब्द-रूपों में से एक अर्थ के द्योतन के लिये किसी एक ही शब्द को चुनना होगा। उदाहरणार्थ, अंग्रेजी के "एग्रीमेंट" शब्द का अर्थ प्रकट करने के लिए केन्द्र "सहमति" मध्य प्रदेश "सम्मति", उत्तर प्रदेश "मेल" तथा "बिहार रजामंदी का प्रयोग कर रहे हैं। मानकीकृत हिन्दी में इनमें से किसी एक ही शब्द को ग्रहण किया जा सकता है, अथवा इन सबके स्थान पर किसी अन्य शब्द को लिया जा सकता है, जिसे भारत राष्ट्र के अधिकतर लोग जानते मानते हों।

-: हिन्दी के मानक तथा अमानक प्रयोग :-

मानक हिन्दी में वैकल्पिक श्रुति "य" की आवश्यकता नहीं समझी गयी। "य" वाले कुछ शब्द-रूपों के मानक शब्द कोष्ठक में दिये जा रहे हैं :-

1 - संज्ञा - रुपये (रुपए), किराये (किराए), अनुयायी (अनुयाई) ।

क्रिया- विशेषण - नये (नए), नयी (नई), सोयी (सोई), खायी (खाई) जायेगी (जाएगी)

लीजिये (लीजिए), चाहिये (चाहिए) ।

अव्यय - के लिये (के लिए)

2 - जिन शब्दों की समाप्ति हलन्त से होती है, और बिना अर्थ-परिवर्तन हुए यदि उन्हें स्वरान्त किया जा सकता हो, उन्हें हलन्त न करके स्वरान्त कर देना मानक हिन्दी में ग्राह्य है -

पृथक् (पृथक), सम्राट् (सम्राट), महान् (महान) ।

अर्थात् (अर्थात), पश्चात् (पश्चात), परिषद् (परिषद) ।

3 - देवनागरी की उच्चारण-सम्बन्धी भेदकारी शक्ति की सम्पन्नता-वृद्धि के लिये

॥ ॥

हिन्दी भाषा विकास - डा0 ईश्वरचन्द्र राही

सम्पर्क भाषा हिन्दी - डा0 धीरेन्द्र वर्मा

हिन्दी भाषा उद्गम और विकास - डा0 उदयनारायण तिवारी

हिन्दी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास - डा0 सत्यनारायण तिवारी

भाषा शास्त्र की रूप रेखा - डा0 उदयनारायण तिवारी

हिन्दी व्याकरण - पं0 कामता प्रसाद गुरु

प्राचीन भारतीय लिपि माला - गौरी शंकर हीरानन्द ओझा

सामान्य भाषा विज्ञान - बाबूराम सक्सेना

भाषा विज्ञान - श्याम सुन्दर दास

भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी - सुनीति कुमार चटर्जी

-: त्रुटि निवारण :-

कृपया टंकण मशीन से अस्पष्ट प्रकाशित होने वाले वर्णों को निम्नानुसार अवलोकित करने का कष्ट करें -

"ल", वर्णों तथा बिन्दुगत त्रुटियाँ टंकण मशीन की खराबी से हुई है। विश्वास है पाठक गण मेरी त्रुटियों को क्षमा करेंगे।

====0=====